दर्शन एवं संस्कृति विभाग, संस्कृति विद्यापीठ

स्नातक कार्यक्रम हेतु

अधिगम परिणाम आधारित पाठ्यक्रम संरचना (LOCF)

विभाग की कार्य-योजना (Action Plan of the Department)

दर्शन एवं संस्कृति विभाग; शास्त्रीय भारतीय व पश्चिमी दर्शन, भाषा-दर्शन, संस्कृति-दर्शन, तुलनात्मक दर्शन, सामाजिक-राजनीतिक दर्शन, तुलनात्मक धर्म, नैतिकता तथा तर्कशास्त्र की विभिन्न शाखाओं पर अभिकेंद्रित है। दर्शनशास्त्र आलोचनात्मक दृष्टि एवं विचार की एक व्यापक प्रक्रिया है, इसमें निरीक्षण और परीक्षण की अधिमान्यता, मान्यताओं का पुनर्मूल्यांकन तथा दार्शनिक प्रणालियों का तर्कणापूर्ण व्यवस्थितिकरण करना शामिल है। दर्शनशास्त्र, एक तर्कसंगत बौद्धिक सम्पदा का दस्तावेज़ होने के कारण, हमारी वैचारिकी को तीक्ष्ण करता है, हमारी समझ को समृद्ध करता है तथा हमारे बौद्धिक क्षितिज का विस्तार करता है। दर्शनशास्त्र का अनुशासन वर्तमान शिक्षा में अपरिहार्य है, इसका अनुप्रयोज्य प्रभाव जीवन के सभी क्षेत्रों में स्पष्ट है, यथा-राष्ट्रीय नीतिगत निर्णय, प्रबंधन, मीडिया, कानून, पारिस्थितिकी, विज्ञान-प्रौद्योगिकी, संस्कृति आदि परम्परा से जो विरासत हमें प्राप्य है तथा हमारे जीवन को प्रभावित करती है; इनमें से कोई भी महत्त्वपूर्ण समाधान दार्शनिक नींव के बिना संभव नहीं हो सकता है।

विभाग का मुख्य उद्देश्य दार्शनिक चर्चा के लिए अंतर्राष्ट्रीय मंच के रूप में कार्य करने के लिए विद्वानों के बीच सुसंगत विमर्श विकसित करना है। विभाग दार्शनिक और सांस्कृतिक अध्ययन के क्षेत्र में बहुआयामी होने की आकांक्षा रखता है। विभाग का उद्देश्य शास्त्रीय भारतीय दार्शनिक ग्रंथों के गहन अध्ययन और उनकी पुनर्व्याख्या का है, जिससे दार्शनिक वैचारिकी को एक नई प्रेरणा और दिशा मिल सके।

दर्शन और संस्कृति विभाग, विश्वविद्यालय के नवोदित विभागों में से एक है। युवा मेधा में दार्शनिक समझ के साथ विभाग अनुसंधान (शोध) और स्नातकोत्तर में शिक्षण का कार्यक्रम प्रदान करता है। विभाग ऐसे सक्षम वातावरण प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है जिसमें विद्यार्थी व शोधार्थी दर्शन एवं संस्कृति के विभिन्न क्षेत्रों में व्यापक समझ के साथ विश्लेषणात्मक और आलोचनात्मक दृष्टिकोण विकसित कर सकें।

इस कार्यक्रम के उद्देश्य हैं-शैक्षिक तथा गैर-शैक्षणिक संस्थानों, अनुसंधान एवं विकास संगठनों के आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु अत्यधिक विश्लेषणात्मक और व्यापक दृष्टिकोण का विकास, विभिन्न सांस्कृतिक परिवेश में विकसित दर्शन के बुनियादी सिद्धांतों की सांगोपांगी समझ, विशेषज्ञता के क्षेत्र का गंभीर ज्ञान, दार्शनिक विचारों के विकास की सामान्य जागरूकता, अनवरत सीखने तथा बहुविषयी-अन्तर्संबन्ध विकसन के साथ गुणवत्तापूर्ण और व्यवसायोन्मुख शैक्षिक वातावरण की निर्मिति हेतु संकल्पित है।

शीर्षक (Title)	कार्य-योजनाएँ (Action Plans)
शिक्षण **Teaching**	• उपाधि कार्यक्रम (Degree Programme) ❖ अनुसंधान कार्यक्रम (Ph. D. Programme) ❖ परास्नातक कार्यक्रम (PG Programme) ❖ स्नातक कार्यक्रम (UG Programme)
प्रशिक्षण **Training**	**'पद्धतिशास्त्र एवं शिक्षणविधि : दर्शनशास्त्र का अध्ययन एवं अध्यापन'** **विषय पर प्रतिवर्ष कार्यशाला के आयोजन की योजना**
विभाग द्वारा चिह्नित विशेषीकृत शोध-क्षेत्र (Research Areas specified by the Department)	**भाषा-दर्शन,** **समसामयिक चिंतन,** **सामाजिक एवं राजनैतिक दर्शन,** **मूल ग्रंथ आधारित शोध तथा** **नैतिकता केन्द्रित शोध**
ज्ञान-वितरण के माध्यम Modes of the Dissemination of Knowledge	• विभाग द्वारा प्रकाशन कार्यक्रम सुनिश्चित करना • शोध- पत्रिका का प्रकाशन • दार्शनिक परियोजना द्वारा समाज का अध्ययन • राष्ट्रीय संगोष्ठियों/ कार्यशाला का आयोजन
प्रकाशन-योजना	**भाषा-दर्शन से संबन्धित ग्रंथ**

स्नातक कार्यक्रम-विवरण हेतु ढाँचा

विभाग का नाम : दर्शन एवं संस्कृति

पाठ्यक्रम का नाम : दर्शनशास्त्र (स्नातक)

पाठ्यक्रम कोड : BAPHIL

अपेक्षित अधिगम परिणाम (Programme Learning Outcomes

ज्ञान संबंधी	कौशल/दक्षता संबंधी	रोजगार संबंधी
दर्शनशास्त्र वर्तमान में सर्वाधिक चुनौतीपूर्ण विषयों में से एक है। यह छात्रों को महान दार्शनिकों और उनके विचारों से परिचित कराएगा और यह भी कि कैसे उनके सिद्धांतों के माध्यम से समकालीन समस्याओं के बारे में चिंतन कर सकते हैं। यह कार्यक्रम भारतीय और पश्चिमी दर्शन को व्यापक आकार देगा। यह छात्रों को नैतिकतापूर्ण मान्यताओं को मुख्यधाराओं से भी अवगत कराएगा। छात्र कई अन्य मूल और वैकल्पिक पत्रों के माध्यम से विज्ञान, तर्कशास्त्र, धर्म-दर्शन, समकालीन चिन्तन, अध्यात्म, पर्यावरणीय नैतिकता तथा मूल-ग्रंथ के आलोक में दर्शनशास्त्र का पाठ कर सकते हैं।	पाठ्यचर्या का मुख्य उद्देश्य छात्र को विश्व से संबंधित मूलभूत दार्शनिक तथ्यों से अवगत कराना है, चाहे वह हमारे जीवन से हो, मन से हो, अस्तित्व से हो, विश्वास से हो, धर्म से हो या विज्ञान से संबंधित हो, दर्शनशास्त्र स्वरूप-विश्लेषण में व्यापक और गहन है। दर्शनशास्त्र के लिए यह पाठ्यचर्या विषयगत छात्रों की आवश्यकताओं, अपेक्षाओं और आकांक्षाओं के साथ-साथ एक विषय के रूप में दर्शनशास्त्र की आधुनिकतावादी प्रवृत्तियों और कार्यप्रणालियों के दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए तैयार किया गया है। पाठ्यचर्या सीखने के क्रम में ज्ञान, समझ, कौशल, दृष्टिकोण तथा मूल्य का विकसन अभीष्ट है।	दर्शनशास्त्र का उद्देश्य गंभीर, तार्किक और विश्लेषणात्मक रूप से सोचने की क्षमता को विकसित करना है और इसलिए व्यावहारिक स्थितियों में दार्शनिक तर्क (मेधा) का उपयोग करना है। दर्शनशास्त्र में उपाधि ग्रहण करने वाले छात्रों को मीडिया, शिक्षा, कानून, राजनीति, सरकार, सिविल सेवा आदि में रोजगार-निर्माण हेतु व्यापक मदद मिलेगी।

शिक्षण अभिगम, विधियाँ, तकनीक एवं उपादान (Approaches, Methods, Techniques and Tools of Teaching) :

अभिगम	शिक्षण एक निरंतर प्रक्रिया है जो छात्रों के ज्ञान, शैक्षणिक जिज्ञासा, पढ़ने और अभ्यास, रचनात्मकता, सोचने की क्षमता और अपने ज्ञान के स्तर को बढ़ाने के लिए तथा लगातार सीखने के दृष्टिकोण से संपृक्त है। यह पाठ्यक्रम छात्रों के बीच बातचीत और उनकी स्वतंत्र रूप से सोचने की क्षमता को विस्तार प्रदान हेतु संकल्पित है।
विधियाँ	छात्रों को कक्षाओं में प्रभावी प्रस्तुति, प्रश्नोत्तरी के साथ-साथ व्याख्यान के माध्यम से मौखिक और लिखित संचार कौशल विकसित किया जाएगा।
तकनीक	कक्षा में यह व्याख्यान, चार्ट, पावरपॉइंट प्रेजेंटेशन और ऑडियो-विजुअल संसाधनों के उपयोग किया जाएगा। छात्र को कुछ विषयों पर चर्चा, समूह चर्चा और संगोष्ठी में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा। जो भी उपयुक्त होगा, जिज्ञासा-समाधान का तरीका अपनाया जाएगा।
उपादान	दर्शनशास्त्र के शिक्षण का उद्देश्य कक्षा में ज्ञान के साथ-साथ जीवन में स्थानांतरण के माध्यम से छात्र को दर्शन, संस्कृति और समाज को समझने में दक्ष बनाना है।

मूल्यांकन/ परीक्षा योजना (Evaluation/Examination Planning): सैद्धांतिक पाठ्यचर्या का मूल्यांकन

आतंरिक मूल्यांकन (25%)					सत्रांत परीक्षा (75%)
घटक	कक्षा में सतत मूल्यांकन	उपस्थिति	सेमिनार*	सत्रीय-पत्र#	
निर्धारित अंक	05	05	07	08	
पूर्णांक	**25**				**75**

*विद्यार्थी द्वारा तीन सेमिनार प्रस्तुतियों में से दो उत्तम हेतु प्राप्त अंकों के औसत के आधार पर मूल्यांकन किया जाएगा।

#विद्यार्थी द्वारा प्रस्तुत तीन सत्रीय पत्र में से दो उत्तम पत्र हेतु प्राप्त अंकों के औसत के आधार पर मूल्यांकन किया जाएगा।

पाठ्यक्रम संरचना (Programme Structure) :

सेमेस्टर	मूल पाठ्यचर्या	क्रेडिट	पाठ्यचर्या का कोड
प्रथम	भारतीय दर्शन-I	3	BAPHIL 111
	पाश्चात्य दर्शन-I	3	BAPHIL 112
द्वितीय	भारतीय दर्शन-II	3	BAPHIL 121
	पाश्चात्य दर्शन- II	3	BAPHIL 122
तृतीय	नीतिशास्त्र	3	BAPHIL 231
	धर्मदर्शन	3	BAPHIL 232
चतुर्थ	तर्कशास्त्र	3	BAPHIL 241
	सामाजिक एवं राजनीतिक दर्शन	3	BAPHIL 242
पंचम	समकालीन भारतीय दर्शन	3	BAPHIL 351
	समकालीन पाश्चात्य दर्शन	3	BAPHIL 352
	तर्कभाषा (केवल प्रमाण प्रकर्ष) अथवा	3	BAPHIL 353
	अधिनीतिशास्त्र	3	BAPHIL 354
षष्ठ	विज्ञान और अध्यात्म दर्शन	3	BAPHIL 361
	विश्व धर्म	3	BAPHIL 362
	भाषा, सत्य और तर्क (परिचय + अध्याय I, II और III) अथवा	3	BAPHIL 363
	व्यावसायिक नैतिकता	3	BAPHIL 364

विषय समूह	पहला सेमेस्टर	दूसरा सेमेस्टर	तीसरा सेमेस्टर	चौथा सेमेस्टर	पांचवा सेमेस्टर	छठा सेमेस्टर
	कंप्यूटर दक्षता (अतिरिक्त अनिवार्य-1) 04 क्रेडिट	पर्यावरण (अनिवार्य-1) 04 क्रेडिट	भारतीय संविधान एवं मानवाधिकार (अनिवार्य-2) 04 क्रेडिट	भाषा अभिप्रेरण पाठ्यचर्या विश्वविद्यालय द्वारा उपलब्ध करायी गयी भाषाओं (हिंदी के अतिरिक्त) में से कोई एक भाषा (अतिरिक्त अनिवार्य-2) 04 क्रेडिट	भारतीय संस्कृति (अनिवार्य-3) 02 क्रेडिट	भारतीय चिंतक (अनिवार्य-4) 02 क्रेडिट
अनिवार्य (हिंदी)	समूह क 06 क्रेडिट	समूह क 06 क्रेडिट	समूह क 06 क्रेडिट	समूह क 06 क्रेडिट	समूह क 09 क्रेडिट	समूह क 09 क्रेडिट
विकल्प 1	समूह ख 06 क्रेडिट	समूह ख 06 क्रेडिट	समूह ख 06 क्रेडिट	समूह ख 06 क्रेडिट	कोई एक चयनित विषय 09+ 09=18 क्रेडिट	
	समूह ग 06 क्रेडिट	समूह ग 06 क्रेडिट	समूह ग 06 क्रेडिट	समूह ग 06 क्रेडिट		
विकल्प 2	समूह ग 12 क्रेडिट	समूह ग 12 क्रेडिट	समूह ग 12 क्रेडिट	समूह ग 12 क्रेडिट	कोई एक चयनित विषय 09+ 09=18 क्रेडिट	
	18 क्रेडिट	22 क्रेडिट	22 क्रेडिट	18 क्रेडिट	20 क्रेडिट	20 क्रेडिट
	कुल क्रेडिट : 120 क्रेडिट+ 08 अतिरिक्त क्रेडिट					

भारतीय दर्शन- I
पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

पाठ्यचर्या का नाम: भारतीय दर्शन- I

पाठ्यचर्या का कोड: BAPHIL 111

क्रेडिट: 3

सेमेस्टर: I

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइन व्याख्यान	45
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य	
कौशल विकास गतिविधियाँ	
कुल क्रेडिट घंटे	**45**

पाठ्यचर्या विवरण (Description of Course) :

इस पाठ्यचर्या का उद्देश्य छात्रों को भारतीय बौद्धिक परंपराओं से परिचित कराना है। यह पाठ्यचर्या भारतीय दर्शन के स्वरूप, लक्षण तथा विश्लेषण पर अवलंबित होगा। प्रारम्भिक व प्रमुख संप्रदायों का एक परिचय होगा, जहां छात्र प्रमुख भारतीय अवधारणाओं का विश्लेषणात्मक अनुशीलन करेंगे। इस पाठ्यचर्या से छात्रों को अपने दैनिक जीवन में भारतीय दार्शनिक अध्ययन के महत्त्व को समझने में उपयोगी होगा। भारतीय दर्शन को समझने के लिए विश्लेषणात्मक पद्धति पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा।

इसका उद्देश्य छात्रों को विभिन्न अवधारणाओं में अनुस्यूत वैदिक दर्शन, उपनिषदीय दर्शन, गीता का दर्शन, श्रुति और स्मृति, कर्म, ज्ञान और भक्ति जैसे विभिन्न प्रणालियों, लोकायत का भौतिकवाद, जैन दर्शन तथा बौद्ध दर्शन के अंतर्गत अध्ययनों में भारतीय दार्शनिक अवधारणाओं से परिचित कराना और विकसित करना है।

अपेक्षित अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes):

इस पाठ्यचर्या से विद्यार्थी भारतीय दर्शन के बौद्धिक परंपराओं की समृद्धता को वैदिक दर्शन, उपनिषदीय दर्शन तथा गीता का दर्शन के माध्यम से समझ विकसित करेंगे। छात्र विभिन्न प्राचीन भारतीय संप्रदायों जैसे चार्वाक, जैन व बौद्ध धर्म के ज्ञानमीमांसीय, तत्त्वमीमांसीय व नैतिक उपदानों से परिचित होंगे। छात्र दार्शनिक संप्रदाय को समझने के लिए तार्किक और तर्कसंगत जांच विकसित करना सीखेंगे। छात्र सभी प्रणालियों का तुलनात्मक विश्लेषण करने में सक्षम होंगे जो उनके तार्किक कौशल को विकसित करेगा। छात्र गंभीर रूप से सोचने और वैज्ञानिक रीति से पढ़ने और विश्लेषण करने की क्षमता विकसित करेंगे।

पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु (Contents of the Course)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	कुल घंटे	पाठ्यचर्या का प्रतिशत अंश
मॉड्यूल-1 **भारतीय दर्शन की रूपरेखा**	1.1- भारतीय दर्शन का स्वरूप 1.2- भारतीय दर्शन का वर्गीकरण 1.3- भारतीय दर्शन की विशेषताएं 1.4- दर्शन तथा फिलासफी के मध्य भेद	5	11
मॉड्यूल-2 **वैदिक व उपनिषदीय दर्शन**	2.1- आगम (श्रुति) व निगम (स्मृति) का भेद 2.2- आत्मतत्त्व 2.3- ब्रह्मतत्त्व 2.4-माया या अविद्या 2.5- मोक्ष और मोक्ष-साधन	6	13
मॉड्यूल-3 **भगवद्गीता का दर्शन**	3.1- कर्मयोग 3.2 अहंकार रहित कर्म करना ही कर्मयोग है 3.3 अनासक्त कर्म ही कर्मयोग है 3.4 गीता के कर्मयोग की विशेषता 3.5 गीता का कर्मयोग भक्तिपूर्ण कर्मयोग है	5	12

	3.6 ज्ञानयोग 3.7 भक्तियोग		
मॉड्यूल-4 **लोकायत-दर्शन**	4.1 जड़वाद का अर्थ 4.2. जड़वाद के प्राचीन रूप 4.3. चार्वाक दर्शन के प्रवर्तक 4.4. प्रमाण-विचार 4.5. तत्त्वज्ञान 4.6. आत्माविचार-चार मत 4.7. ईश्वर का निराकरण 4.8. चार्वाक दर्शन में नैतिक विचार 4.9. चार्वाक दर्शन में धर्म एवं मोक्ष विचार 4.10. चार्वाक दर्शन की समालोचना	5	12
मॉड्यूल-5 **जैनदर्शन**	5.1. जैन दर्शन का सामान्य परिचय 5.2. जैन-दर्शन साहित्य 5.3. ज्ञान मीमांसा-(क) प्रत्यक्ष (ख) परोक्ष प्रमाण- अनुमान (ग) शब्द प्रमाण 5.4. नय का विचार 5.5. निक्षेपवाद 5.6. स्याद्वाद 5.7. सप्तभंगीनय 5.8. अनेकान्तवाद 5.9. तत्त्वमीमांसा-(i) द्रव्य (ii) जीव-तत्त्व (iii) अजीव-तत्त्व 5.10. मोक्ष-साधन 5.11. अनीश्वरवाद 5.12. समालोचना	9	20
मॉड्यूल-6 **बौद्ध दर्शन**	6.1. बुद्ध का जीवन 6.2. बुद्ध की समकालीन दार्शनिक विचारधाराएँ 6.3. प्राचीन बौद्ध साहित्य 6.4. बुद्ध के उपदेश-(क) चार आर्यसत्य (ख) मध्यम मार्ग (ग) आष्टांगिक मार्ग 6.5. बौद्ध-दर्शन के सामान्य दार्शनिक सिद्धान्त-(क) प्रतीत्य समुत्पाद (ख) क्षणभंगवाद (ग) नैरात्म्यवाद (घ) पंच स्कन्ध (च) कर्मवाद 6.6. बौद्ध-धर्म की उत्पत्ति 6.7. बौद्ध-दर्शन/धर्म के सम्प्रदाय- हीनयान और महायान 6.8. बौद्ध- दर्शन/धर्म का प्रभाव 6.9. बौद्ध-दर्शन के चार निकाय	15	34
योग		**45**	**100**

अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ (Textbooks/Reference/Resources)

क्र. सं.	पाठ्य-सामग्री	विवरण
1	आधार/पाठ्य ग्रंथ	
2	**संदर्भ-ग्रंथ**	1. Datta & Chatterjee, (1968). An Introduction to Indian Philosophy, University of Calcutta Press, **हिन्दी संस्करण भी उपलब्ध**

		2. Sharma, C.D., (2010) A Critical Survey of Indian Philosophy, MLBD, New Delhi **हिन्दी संस्करण भी उपलब्ध** 3. Radhakrishnan, S. (1999) Indian Philosophy, Vol. I, Oxford University Press, New Delhi, **हिन्दी संस्करण भी उपलब्ध**, Rajpal & Sons, New Delhi, 4. Dasgupta, S.N. (1975) A History of Indian Philosophy, Vol. I-V, Motilal Banarsidas, Delhi,. **हिन्दी संस्करण भी उपलब्ध** 5. देवराज, नंदकिशोर (1975) भारतीय दर्शन (संपादित), उत्तर प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, लखनऊ 6. उपाध्याय, बलदेव (पुनर्मुद्रित, 1997) भारतीय दर्शन, शारदा मंदिर, वाराणसी 7. Dayakrishna, (1996) Indian Philosophy, Oxford University Press **हिन्दी संस्करण भी उपलब्ध** 8. पाण्डेय, संगम लाल (1994) भारतीय दर्शन का सर्वेक्षण, प्रयागराज 9. Hiriyanna, M (1994). Outlines of Indian Philosophy, Motilal Banarasidas, Delhi, 10. हिरियन्ना, एम. (1965) भारतीय दर्शन की रूपरेखा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली (अनुवादक- गोवर्धन भट्ट)
3	**ई-संसाधन**	Bhattacharya, Ramkrishna. "Materialism in India: A SynopticView."Retrieved 27 July 2012.http://www.carvaka4india.com/2011/08/materialism-in-india-synoptic-view.html Chatalian, George. 1983. Early Indian Buddhism and the nature of philosophy: A philosophical investigation. *Journal of Indian Philosophy*11(2): 167-222. Koller, John M. 1977. Skepticism in Early Indian Thought.*Philosophy East and West* 27(2): 155-164 Prevos, Peter. "*The Self in Indian Philosophy: Hindu, Buddhist and Carvaka views*." Retreived, April 2002.https://prevos.net/humanities/philosophy/self/uddhist Theory of Meaning, Delhi, 2017
4	अन्य	

पाश्चात्य दर्शन- I
पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

पाठ्यचर्या का नाम: पाश्चात्य दर्शन- I

पाठ्यचर्या का कोड: BAPHIL 112

क्रेडिट : 3

सेमेस्टर : I

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइन व्याख्यान	45
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य	
कौशल विकास गतिविधियाँ	
कुल क्रेडिट घंटे	**45**

पाठ्यचर्या विवरण (Description of Course) :

इस पाठ्यचर्या के अन्तर्गत ग्रीक दर्शन का उद्भव एवं विकास, पाश्चात्य दर्शन की प्रमुख विशेषताएं, आयोनिक तथा पाइथागोरियन संप्रदाय में परा सिद्धांत, इलियाटिक संप्रदाय में सत् की अवधारणा, हेरालाइट्स का संभूति की अवधारणा, ऐम्पीडाक्लीज का तत्त्व सिद्धांत, एनेक्जागोरस का तर्क सिद्धांत, ल्युसिपस एवं डेमोक्रेट्स का परमाणु सिद्धांत, सोफिस्टों के प्रमुख सिद्धांत, सुकरात का सद्गुण, प्लेटो का ज्ञान सिद्धांत, प्रत्यय का सिद्धांत एवं अरस्तू के प्रत्यय का आलोचनात्मक सिद्धांत, आकार एवं स्वरूप, कारणता सिद्धांत, संत आगस्टाइन का ज्ञान सिद्धांत, संत थॉमस एक्विनास का ईश्वर विचार, आस्था एवं तर्कबुद्धि के बीच अंतर का अध्ययन करके विभिन्न दर्शन एवं सिद्धांत के द्वारा व्यवहारिक जीवन में इसकी उपयोगिता को सार्थक बनाएंगे।

अपेक्षित अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes) :-

विद्यार्थी इस पाठ्यचर्या को पढ़ने के पश्चात् ग्रीक दर्शन की मूल विवेचना में समर्थ होगा तथा विभिन्न महत्त्वपूर्ण सिद्धांतों एवं विचारों के माध्यम से ग्रीक दर्शन के मूल प्रवृत्तियों को पहचान पायेगा, ग्रीक और भारतीय दर्शन की तुलना करने में समर्थ होगा। रचनात्मक चिंतन करते हुए इस दर्शन के वर्तमान प्रासंगिकता को बताने में समर्थ होगा। पाश्चात्य दर्शन के विकासयात्रा के महत्त्व को रेखांकित करेगा। इस प्रकार अकादमिक के साथ ही यह सम्पूर्ण पाठ्यचर्या दर्शन के जिज्ञासुओं हेतु अतिमहत्त्वपूर्ण सिद्ध होगी।

पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु (Contents of the Course)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	कुल घंटे	पाठ्यचर्या का प्रतिशत अंश
मॉड्यूल-1	1.1- पाश्चात्य दर्शन का स्वरूप एवं विशेषताएं 1.2- ग्रीक दर्शन का उद्भव एवं विकास 1.3- आयनिक सम्प्रदाय में परा सिद्धांत 1.4 - पाइथागोरियन सम्प्रदाय में परा सिद्धांत 1.5- इलियाटिक संप्रदाय में सत्य की अवधारणा 1.6- हेराक्लाइटस के संभूति की अवधारणा 1.7- एम्पीडाक्लीज का तत्त्व सिद्धांत	20	45
मॉड्यूल-2	2.1- एनेक्जागोरस का तर्क सिद्धांत 2.2- ल्युसिपस तथा डेमोक्रेट्स का परमाणु सिद्धांत	05	11
मॉड्यूल-3	3.1- सोफिस्टों के प्रमुख सिद्धांत 3.2- सुकरात की प्रणाली 3.3- प्लेटो का ज्ञान सिद्धांत, प्रत्यय सिद्धांत 3.4- अरस्तु- प्रत्यय का आलोचनात्मक सिद्धांत, आकार एवं स्वरूप, कारणता सिद्धांत	10	22
मॉड्यूल-4	4.1- संत आगस्टाइन का ज्ञान सिद्धांत, अशुभ की समस्या	05	11
मॉड्यूल-5	5.1- संत थॉमस एक्विनास का ईश्वर विचार, आस्था एवं तर्कबुद्धि के बीच अंतर	05	11
योग		**45**	**100**

अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ (Textbooks/Reference/Resources)

क्र. सं.	पाठ्य-सामग्री	विवरण
1	आधार/पाठ्य ग्रंथ	
2	**संदर्भ-ग्रंथ**	1. Will, Durant. (2006). A Story of Philosophy, Simon & Schuster, & Pocket Books, New York. 2. Bertand, Russell. (1987). A History of Western Philosophy, Union paper Backs, London. 3. Frank, Thilly. (1975) History of Western Philosophy, Central Book Dipo, Allahabad. 4. कृष्ण, दया. (1988). पाश्चात्य दर्शन (संपादित) भाग-1-2, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी. 5. Stace, W.T. (1985). A Critical History of Greek Philosophy, Macmillan, New Delhi. 6. Masih, Y. (1994). A Critical History of Western Philosophy, Motilal Banarsidas, Delhi. 7. शर्मा, सी.डी. (1992).पाश्चात्य दर्शन, मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली. 8. श्रीवास्तव, सहाय जगदीश.(1973). आधुनिक पाश्चात्य दर्शन का वैज्ञानिक इतिहास, पुस्तक संस्था, गोरखपुर. 9. सिंह, बद्रीनाथ. (1973) पाश्चात्य दर्शन, स्टूडेंट फ्रेंड एण्ड कं., वाराणसी 10. याकूब, मसीह. (2005). पाश्चात्य दर्शन का समीक्षात्मक इतिहास, मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली.
3	ई-संसाधन	विकीपिडिया एवं अन्य ई-सामग्री
4	अन्य	

भारतीय दर्शन- II
पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

पाठ्यचर्या का नाम: भारतीय दर्शन- II

पाठ्यचर्या का कोड: BAPHIL 121

क्रेडिट: 3

सेमेस्टर: II

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइन व्याख्यान	45
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य	
कौशल विकास गतिविधियाँ	
कुल क्रेडिट घंटे	**45**

पाठ्यचर्या विवरण (Description of Course):

इस पाठ्यचर्या का उद्देश्य छात्रों को भारतीय बौद्धिक एवं सुसंगत परंपराओं से परिचित कराना है। यह पाठ्यचर्या भारतीय दर्शन के सुगठित आस्तिक संप्रदायों पर अवलंबित होगा। भारतीय दर्शन के प्रमुख संप्रदायों का एक तात्त्विक व वैचारिक परिचय होगा, जहां छात्र प्रमुख भारतीय अवधारणाओं का विश्लेषणात्मक अनुशीलन करेंगे। इस पाठ्यचर्या से छात्रों को अपने दैनिक जीवन में भारतीय दार्शनिक अध्ययन के महत्त्व को समझने में उपयोगी होगा। भारतीय दर्शन को समझने के लिए तुलनात्मक पद्धति पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा।

इस पाठ्यचर्या का उद्देश्य छात्रों को सांख्य दर्शन, योग दर्शन, न्याय दर्शन, वैशेषिक दर्शन,मीमांसा दर्शन, अद्वैत वेदान्त तथा रामानुज दर्शन के अंतर्गत अध्ययनों में भारतीय दार्शनिक अवधारणाओं से परिचित कराना तथा दार्शनिक विचारों में तुलनात्मक दृष्टिकोण विकसित करना है।

अपेक्षित अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes):

इस पाठ्यचर्या से विद्यार्थी भारतीय दर्शन के बौद्धिक परंपराओं की समृद्धता सांख्य दर्शन, योग दर्शन, न्याय दर्शन, वैशेषिक दर्शन, मीमांसा दर्शन, अद्वैत वेदान्त तथा रामानुज दर्शन के माध्यम से समझ विकसित करेंगे। छात्र दार्शनिक संप्रदाय को समझने के लिए तार्किक और तर्कसंगत जांच विकसित करना सीखेंगे। छात्र सभी प्रणालियों का तुलनात्मक विश्लेषण करने में सक्षम होंगे जो उनके तार्किक कौशल को विकसित करेगा । छात्र गंभीर रूप से सोचने और विश्लेषण करने की क्षमता विकसित करेंगे।

पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु (Contents of the Course)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	व्याख्यान कुल घंटे	पाठ्यचर्या का प्रतिशत अंश
मॉड्यूल-1 **सांख्य दर्शन**	1.1. सांख्य-दर्शन का सामान्य परिचय 1.2. सांख्य के आचार्य और साहित्य 1.3. सत्कार्यवाद 1.4. तत्त्व-विचार- (क) प्रकृति (ख) गुण-विचार (ग) पुरुष का विवेचन 1.5. सृष्टि और लय 1.6. प्रमाण-विवेचन-(क) प्रत्यक्ष (ख) अनुमान (ग) शब्द 1.7. मोक्ष 1.8. विकासवाद 1.9. सांख्य में ईश्वर का स्थान 1.10. सांख्य दर्शन की आलोचना	5	11
मॉड्यूल-2 **योग दर्शन**	2.1. योग दर्शन की सर्वमान्यता 2.2. योग दर्शन के आचार्य और ग्रन्थ 2.3. चित्त-विज्ञान 2.4. समाधि का स्वरूप 2.5. क्लेश का स्वरूप 2.6. योग के साधन या अष्टांग मार्ग 2.7. कैवल्य का स्वरूप	5	11

	2.8. ईश्वर का स्वरूप 2.9. विभूति का विवेचन 2.10. योग-दर्शन की समालोचना		
मॉड्यूल-3 **न्याय दर्शन**	3.1. न्याय-दर्शन का सामान्य परिचय 3.2. न्याय-दर्शन के आचार्य और साहित्य 3.3. पदार्थ-निरूपण 3.4. प्रमाण-विचार 3.5. प्रत्यक्ष-प्रमाण 3.6. अनुमान प्रमाण 3.7. हेत्वाभाव 3.8. उपमान प्रमाण 3.9. शब्द प्रमाण 3.10. प्रामाण्य-विचार 3.11. अयथार्थ अनुभव के भेद या अप्रमा के भेद 3.12. कार्यकारण का सिद्धान्त 3.13. न्याय दर्शन की तत्त्वमीमांसा 3.14. अपवर्ग या मोक्ष 3.15- ईश्वर-सिद्धि हेतु तर्क	10	22
मॉड्यूल-4 **वैशेषिक दर्शन**	4.1. वैशेषिक दर्शन का सामान्य-परिचय 4.2. पदार्थ-निरूपण 4.3. द्रव्य-विवेचन 4.4. गुण-विवेचन 4.5. कर्म-विवेचन 4.6. सामान्य-विवेचन 4.7. विशेष-विवेचन 4.8. समवाय-विवेचन 4.9. अभाव-विवेचन 4.10. परमाणुवाद 4.11. सृष्टि और प्रलय 4.12. न्याय-दर्शन और वैशेषिक दर्शन में भेद 4.13. वैशेषिक दर्शन की आलोचना	5	11
मॉड्यूल-5 **मीमांसा दर्शन**	5.1. दो मीमांसाएं 5.2. पूर्व मीमांसा का सामान्य परिचय 5.3. मीमांसा के आचार्य एवं साहित्य 5.4. प्रमाण-विचार (क) प्रत्यक्ष (ख) अनुमान (ग) उपमान (घ) शब्द (ङ) अन्विताभिधानवाद (च) अभिहितान्यवाद (छ) जातिशक्तिवाद (ज) अर्थापत्ति (झ) अनुपलब्धि 5.5. प्रामाण्यवाद 5.6. भ्रान्ति का सिद्धान्त 5.7. तत्त्व-विचार 5.8. आत्मा का विचार 5.9. धर्म का विवेचन 5.10. अपूर्व का सिद्धान्त 5.11. मोक्ष का विमर्श 5.12. ईश्वर का विमर्श	5	11

	5.13. मीमांसा की आलोचना		
मॉड्यूल-6 **अद्वैत वेदान्त**	6.1. वेदान्त का अर्थ 6.2. ब्रह्मसूत्र के भाष्य 6.3. वेदान्त के आचार्य और ग्रन्थ 6.4. वेदान्त की सर्वश्रेष्ठता 6.5. क्या शंकर प्रच्छन्न बौद्ध हैं? 6.6. तत्त्वमीमांसा-(क) आत्मा का स्वरूप और अस्तित्व (ख) आत्मा या ब्रह्म (ग) ईश्वर का स्वरूप (घ) माया (च) जीव (छ) जीव और ईश्वर का संबंध (ज) जीव एक है या अनेक? 6.7. ज्ञान-मीमांसा -(क) ज्ञान का स्वरूप, (ख) परोक्ष ज्ञान के प्रकार, (ग) अज्ञान का स्वरूप, (घ) अध्यास, (ङ) जगत विचार, (च) सत्ता का स्तरीकरण, (छ) भेद का खण्डन, (ज) अनिर्वचनीय ख्यातिवाद, (झ) अविद्या-निवृत्ति 6.8. मोक्ष का स्वरूप 6.9. मोक्ष-मार्ग-(क) ज्ञानमार्ग (ख) भक्तिमार्ग(ग) कर्म से समुच्चित ज्ञानमार्ग 6.10. आलोचना	10	22
मॉड्यूल-7 **विशिष्टाद्वैत दर्शन**	7.1 रामानुज मत का प्रभाव 7.2. विशिष्टाद्वैत दर्शन का सामान्य परिचय 7.3. प्रमाणमीमांसा 7.4. तत्त्वमीमांसा- (अ) ब्रह्म-विचार, (ब) मायावाद की आलोचना, (स) सृष्टि-विचार, (द) जीव का स्वरूप और ब्रह्मजीव-सम्बन्ध 7.5. आचारमीमांसा (बन्धन और मोक्ष)	5	12
योग		**45**	**100**

अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ (Textbooks/Reference/Resources)

क्र. सं.	पाठ्य-सामग्री	विवरण
1	आधार/पाठ्य ग्रंथ	
2	**संदर्भ-ग्रंथ**	1. Datta & Chatterjee, (1968). An Introduction to Indian Philosophy, University of Calcutta Press, **हिन्दी संस्करण भी उपलब्ध** 2. Sharma, C.D., (2010) A Critical Survey of Indian Philosophy, MLBD, New Delhi **हिन्दी संस्करण भी उपलब्ध** 3. Radhakrishnan, S. (1999) Indian Philosophy, Vol. I, Oxford University Press, New Delhi, **हिन्दी संस्करण भी उपलब्ध**, Rajpal & Sons, New Delhi, 4. Dasgupta, S.N. (1975) A History of Indian Philosophy, Vol. I-V, Motilal Banarsidas, Delhi,. **हिन्दी संस्करण भी उपलब्ध** 5. देवराज, नंदकिशोर (1975) भारतीय दर्शन (संपादित), उत्तर प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, लखनऊ 6. उपाध्याय, बलदेव (पुनर्मुद्रित, 1997) भारतीय दर्शन, शारदा मंदिर, वाराणसी 7. Dayakrishna, (1996) Indian Philosophy, Oxford University Press **हिन्दी संस्करण भी उपलब्ध** 8. पाण्डेय, संगम लाल (1994) भारतीय दर्शन का सर्वेक्षण, प्रयागराज 9. Hiriyanna, M (1994). Outlines of Indian Philosophy, Motilal Banarasidas, Delhi 10. हिरियन्ना, एम. (1965) भारतीय दर्शन की रूपरेखा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली (अनुवादक- गोवर्धन भट्ट)
3	**ई-संसाधन**	Bhattacharya, Ramkrishna. "Materialism in India: A SynopticView."Retrieved 27 July 2012.http://www.carvaka4india.com/2011/08/materialism-in-india-synoptic-view.html

		Chatalian, George. 1983. Early Indian Buddhism and the nature of philosophy: A philosophical investigation. *Journal of Indian Philosophy*11(2): 167-222. Koller, John M. 1977. Skepticism in Early Indian Thought.*Philosophy East and West* 27(2): 155-164 Prevos, Peter. "*The Self in Indian Philosophy: Hindu, Buddhist and Carvaka views*." Retreived, April 2002.https://prevos.net/humanities/philosophy/self/uddhist Theory of Meaning, Delhi, 2017
4	अन्य	

पाश्चात्य दर्शन - II
पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

पाठ्यचर्याका नाम : पाश्चात्य दर्शन - II

पाठ्यचर्या का कोड: BAPHIL 122

क्रेडिट : 3

सेमेस्टर : II

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइनव्याख्यान	45
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य	
कौशल विकास गतिविधियाँ	
कुल क्रेडिटघंटे	**45**

पाठ्यचर्या विवरण (Description of Course) :-

इस पाठ्यचर्या में विद्यार्थी पश्चिम के प्रमुख दार्शनिक डेकार्ट के दर्शन की समस्याएं, संदेह प्रणाली, मैं सोचता हूं इसलिए मैं हूं, द्रव्य का सिद्धांत, ईश्वर के अस्तित्व सिद्धि का तर्क, मन शरीर द्वैतवाद एवं स्पिनोजा द्वारा डेकार्ट के द्रव्य विचार का निरसन, द्रव्य विचार, गुण तथा लाइबनित्ज के चिदणु सिद्धांत, पूर्व स्थापित सामंजस्य का नियम के साथ ही अनुभववाद के अंतर्गत जॉन लॉक के जन्मजात प्रत्यय का खंडन, ज्ञान का सिद्धांत, द्रव्य, गुण, प्राथमिक एवं द्वितीयक गुण एवं जॉर्ज बर्कले द्वारा जड़तत्त्वों का खंडन, सत्ता दृश्यता है, निरपेक्ष प्रत्ययवाद, ह्यूम के ज्ञान का सिद्धांत, संस्कार एवं प्रत्यय, कारणता का सिद्धांत, संशयवाद, तत्त्वमीमांसीय सत्ता का निरसन तथा जर्मन दार्शनिक इमानुएल कांट का समीक्षावाद, देश और काल, व्यवहार एवं परमार्थ, हेगल के द्वंद्व-न्याय, निरपेक्ष प्रत्ययवाद के अध्ययन द्वारा ज्ञान प्राप्ति के विभिन्न माध्यमों के जानकारी के साथ ही जीवन में उसकी सार्थकता का मूल्यांकन करने में समर्थ हो सकेंगे।

अपेक्षित अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes):-

विद्यार्थी इस पाठ्यचर्या को पढ़ने के पश्चात् दर्शन की मूल प्रवृति, महत्त्वपूर्ण दार्शनिक सिद्धांत यथा बुद्धिवाद, अनुभववाद, समीक्षावाद, देश और काल, व्यवहार एवं परमार्थ, हेगल के द्वंद्व-न्याय, निरपेक्ष प्रत्ययवाद का अध्ययन करके ज्ञान प्राप्ति के विभिन्न माध्यमों के अध्ययन करने के साथ ही इसे अपने जीवन में आत्मसात कर के व्यवहारिक धरातल पर इसकी संपरीक्षा करने की स्थिति में होगा। पाश्चात्य एवं भारतीय दर्शन के श्रेष्ठ विचारों की तुलना करने में समर्थ होगा।

पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु(Contents of the Course)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	कुल घंटे	पाठ्यचर्या का प्रतिशत अंश
मॉड्यूल-1 **डेकार्ट का दर्शन**	1.1- संदेह प्रणाली 1.2- मैं सोचता हूं, इसलिए मैं हूं 1.3- द्रव्य का सिद्धांत 1.4- ईश्वर के अस्तित्व सिद्धि का तर्क 1.5- मन-शरीर द्वैतवाद	**10**	**22**
मॉड्यूल-2 **स्पिनोजा का दर्शन**	2.1- स्पिनोजा : डेकार्ट के द्रव्य विचार का निरसन 2.2- द्रव्य विचार 2.3- गुण 2.4- सर्वेश्वरवाद	**05**	**11**
मॉड्यूल-3 **लाइबनित्ज का दर्शन**	3.1- चिदणु सिद्धांत 3.2- पूर्व- स्थापित सामंजस्य का नियम	**05**	**11**
मॉड्यूल-4 **जॉन लॉक का दर्शन**	4.1- जन्मजात प्रत्यय का खंडन 4.2- ज्ञान का सिद्धांत 4.3- द्रव्य	**05**	**11**

	4.4- गुण : प्राथमिक एवं द्वितीयक गुण		
मॉड्यूल-5 **जार्ज बर्कले का दर्शन**	5.1- जड़ तत्व का खंडन 5.2- सत्ता दृश्यता है 5.3- निरपेक्ष प्रत्ययवाद	**05**	**11**
माड्यूल-6 **डेविड ह्यूम का दर्शन**	6.1- ज्ञान का सिद्धांत 6.2- संस्कार एवं प्रत्यय 6.3- कारणता का सिद्धान्त 6.4- तत्त्वमीमांसीय सत्ता का निरसन	**05**	**11**
माड्यूल-7 **कांट का दर्शन**	7.1- समीक्षावाद 7.2- देश और काल 7.3- व्यवहार और परमार्थ	**05**	**11**
माड्यूल-8 **हेगल का दर्शन**	8.1- द्वंद्व न्याय 8.2- निरपेक्ष प्रत्ययवाद	**05**	**11**
योग		**45**	**100**

अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ (Textbooks/Reference/Resources)

क्र. सं.	**पाठ्य-सामग्री**	**विवरण**
1	आधार/पाठ्य ग्रंथ	
2	**संदर्भ-ग्रंथ**	1. Russell, Bertrand. (1987). A History of Western Philosophy, Union paper Backs, London 2. Frank, Thilly. (1975). History of Western Philosophy, Central Book Depot, Allahabad. 3. Falkenberg, Richard. (1977). History of Modern Philosophy, Progressive Publishers, Calcutta. 4. कृष्ण, दया. (1988). पाश्चात्य दर्शन भाग-1-2, राजस्थान हिंदी अकादमी. 5. Y, Masih. (1994). A Critical History of Western Philosophy, Motilal Banarsidas, Delhi. 6. शर्मा, सी.डी.(1992). पाश्चात्य दर्शन, मोतीलाल बनारसीदास. 7. श्रीवास्तव, जगदीश सहाय (1973).आधुनिक पाश्चात्य दर्शन का वैज्ञानिक इतिहास, पुस्तक संस्था, गोरखपुर. 8. सिंह, बी.एन. (1973).पाश्चात्य दर्शन, स्टूडेन्ट् फ्रेन्डस् एन्ड कंपनी.
3	ई-संसाधन	
4	अन्य	

नीतिशास्त्र
पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

पाठ्यचर्याका नाम : नीतिशास्त्र

पाठ्यचर्या का कोड : BAPHIL 231

क्रेडिट: 3

सेमेस्टर : III

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइनव्याख्यान	45
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य	
कौशल विकास गतिविधियाँ	
कुल क्रेडिट घंटे	**45**

पाठ्यचर्या विवरण (Description of Course) :

इसके अंतर्गत विद्यार्थी - नीतिशास्त्र की प्रकृति, नीतिशास्त्र का स्वरूप, नीतिशास्त्र की परिभाषा, नीतिशास्त्रीय प्रणाली, नीतिशास्त्र और विज्ञान, धर्म एवं नीतिशास्त्र, पुरुषार्थ, धर्म की अवधारणा, ऋत् की अवधारणा, नीतिशास्त्रीय सिद्धांत, सुखवाद : परिभाषा एवं परिचय, सुखवाद के प्रकार, मनोवैज्ञानिक सुखवाद, नैतिक सुखवाद, परार्थमूलक सुखवाद, विकासवादी सुखवाद, स्पेन्सर का विकासवादी सिद्धांत, नैतिकता के क्षेत्र में विकासवादी सुखवाद की देन, मिल का उपयोगितावाद,बेंथम का उपयोगितावाद, कांट, नैतिक नियम, सदिच्छा अथवा शुभ संकल्प, पूर्णतावाद, संकल्प की स्वतंत्रता, नैतिक उत्तरदायित्व दण्ड सिद्धांत, विरोधात्मक सिद्धांत, सुधारात्मक सिद्धांत, प्रतिकारात्मक सिद्धांत का अध्ययन करेंगे।

अपेक्षित अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes) :

विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम को पढ़ने के पश्चात् नीतिशास्त्र की मूल विवेचना में समर्थ होगा तथा विभिन्न महत्त्वपूर्ण सिद्धांत एंव विचारों के माध्यम से नीतिशास्त्र के आधारभूत तत्वों को मानव जीवन में लागू करने की स्थिति में सक्षम होगा। नैतिक मूल्यों एवं नैतिकता के सिद्धांतों की वर्तमान प्रासंगिकता को बताने में समर्थ होगा। नीतिशास्त्र के महत्त्व को रेखांकित करेगा । इस प्रकार अकादमिक के साथ ही यह सम्पूर्ण पाठ्यचर्या दर्शन के जिज्ञासुओं हेतु भी अतिमहत्त्वपूर्ण सिद्ध होगी ।

पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु (Contents of the Course)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	कुल घंटे	पाठ्यचर्या का प्रतिशत अंश
मॉड्यूल-1 **नीतिशास्त्र का स्वरूप**	1.1- नीतिशास्त्र की प्रकृति 1.2- नीतिशास्त्र का स्वरूप 1.3- नीतिशास्त्र की परिभाषा 1.4- नीतिशास्त्रीय प्रणाली 1.5- नीतिशास्त्र और विज्ञान 1.6- नीतिशास्त्र एवं धर्म	09	20
मॉड्यूल-2 **नीतिशास्त्रीय सिद्धान्त**	2.1- सुखवाद : परिभाषा एवं परिचय 2.2- सुखवाद के प्रकार- • मनोवैज्ञानिक सुखवाद, • नैतिक सुखवाद • परार्थमूलक सुखवाद 2.3- विकासवादी सुखवाद 2.4- स्पेन्सर का विकासवादी सिद्धांत 2.5- मिल का उपयोगितावाद 2.6- बेंथम का उपयोगितावाद	09	20

मॉड्यूल-3 **कांट का नीतिशास्त्र**	3.1- नैतिक नियम 3.2- सदिच्छा अथवा शुभ संकल्प 3.3- पूर्णतावाद	09	20
मॉड्यूल-4 **नैतिकता की मान्यताएं**	4.1- व्यक्तित्व, विवेक 4.2- संकल्प-स्वातंत्र्य, नैतिक उत्तरदायित्व 4.3- आत्मा की अमरता 4.4 ईश्वर का अस्तित्व	5	10
मॉड्यूल-5 **दंड के नियम**	5.1- विरोधात्मक सिद्धांत 5.2- सुधारात्मक सिद्धांत 5.3- प्रतिकारात्मक सिद्धांत	5	10
मॉड्यूल-6 **भारतीय आचार**	5.1- आश्रम 5.2- पुरुषार्थ 5.3- धर्म, अधर्म 5.4- मूल्य के नियम 5.5- पुरस्कार	08	20
योग		**45**	**100**

अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ (Textbooks/Reference/Resources)

क्र. सं.	पाठ्य-सामग्री	विवरण
1	आधार/पाठ्य ग्रंथ	
2	**संदर्भ-ग्रंथ**	1. मिश्र, डॉ. नित्यानंद. (2005). नीतिशास्त्र (सिद्धान्त तथा प्रयोग),मोतीलाल बनारसीदास. 2. वर्मा, डॉ. वेद प्रकाश. (1977). नीतिशास्त्र के मूल सिद्धान्त, एलाइड पब्लिकेशन, दिल्ली. 3. वर्मा, डॉ. अशोक कुमार. (1977). नीतिशास्त्र के सिद्धान्त, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली. 4. पांडेय, संगमलाल. (2005). नीतिशास्त्र का सर्वेक्षण, सेन्ट्रल पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद. 5. Panigrahi, S.C. (2006). Issues in Indian Ethics, Dept. of Philosophy, Utkal University, Orissa. 6. पाठक, डॉ. दिवाकर. (1974). भारतीय नीतिशास्त्र, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी. 7. Maitra, S.K. (1978). The Ethics of the Hindu's, University of Calcutta. 8. William, Lillie. (1955). An Introduction to Ethics, Allied Publisher, Indian Reprint. 9. जोशी, शांति. (1963). नीतिशास्त्र, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली.
3	ई-संसाधन	
4	अन्य	

धर्म-दर्शन
पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

पाठ्यचर्या का नाम: धर्म-दर्शन

पाठ्यचर्या का कोड: : BAPHIL 232

क्रेडिट: 3

सेमेस्टर: III

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइन व्याख्यान	45
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य	
कौशल विकास गतिविधियाँ	
कुल क्रेडिट घंटे	45

पाठ्यचर्या विवरण (Description of Course) :

इस पाठ्यचर्या का उद्देश्य छात्रों को धर्म की मूल अवधारणाओं और इसके दार्शनिक महत्त्व से परिचित कराना है, इसके लिए धर्म में समसामयिक मुद्दों के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण विकसित करना होगा । इस पाठ्यक्रम का मुख्य लक्ष्य सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में धर्मों के बारे चिंतन को वरीयता प्रदान करना है। इस क्रम में धार्मिक अनुभव, कर्म की स्वतंत्रता, मानवीय पीड़ा, धार्मिक बहुलवाद, धर्मनिरपेक्षता आदि को धर्म के निहितार्थ में स्पष्ट करने पर विशेष जोर दिया जाएगा।

अपेक्षित अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes):

छात्रों को धार्मिक मुद्दों की एक सामान्य समझ प्राप्त होगी। वे धार्मिक मुद्दों के बारे में गंभीर रूप से सोचना सीखेंगे।
सामान्य रूप से रिलीजन और धर्म में बेहतर समझ और भारतीय संदर्भ से परिचित होंगे। यह पाठ्यचर्या कई प्रचलित भ्रांतियों को दूर करेगा, छात्रों को जीवन में विभिन्न धर्मों के तर्कसंगत पहलू को समझ और उनकी भूमिकाएँ निर्दिष्ट करेगा। यह पाठ्यक्रम छात्रों को समानता के दृष्टिकोण और सम्मान की भावना को विकसित करने में मदद करेगा और उनके व्यवहार में धार्मिक अनन्यता को पोषित करेगा। छात्रों और शिक्षकों को धर्मनिरपेक्षता, और मानवीय नैतिकता का बेहतर मॉडल खोजने में संलग्न करेगा।

पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु (Contents of the Course)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	व्याख्यान कुल घंटे	पाठ्यचर्या का प्रतिशत अंश
मॉड्यूल-1 **धर्मदर्शन का स्वरूप**	1.1- धर्म- दर्शन का स्वरूप और प्रकृति 1.2- धर्म, धर्मशास्त्र और धर्म- दर्शन में अंतर 1.3- धर्म की परिभाषा, उत्पत्ति एवं विकास 1.4- धार्मिक चेतना 1.5- दैवी प्रकाशना	5	12
मॉड्यूल-2 **धर्म की अवस्थाएँ**	2.1- आदिम धर्म 2.2- जीववाद 2.3- टोटमवाद 2.4- प्राकृतिक धर्म 2.5-मानवीय धर्म 2.6- आध्यात्मिक धर्म	5	11
मॉड्यूल-3 **धार्मिक दर्शन के प्रकार**	3.1- अनीश्वरवाद 3.2- सर्वेश्वरवाद 3.3- द्वैतवाद 3.4- अनेकेश्वरवाद 3.5- एकेश्वरवाद	10	22

	3.6- निमित्तोपादानेश्वरवाद 3.7- ईश्वरवाद		
मॉड्यूल-4 **ईश्वर के अस्तित्व का प्रमाण**	4.1- तात्त्विक युक्ति 4.2- विश्व संबंधी युक्ति 4.3- प्रयोजनात्मक युक्ति 4.4- नैतिक युक्ति 4.5- कान्ट की युक्ति	10	22
मॉड्यूल-5 **अशुभ की समस्या**	5.1- अशुभ का स्वरूप 5.2- अशुभ के प्रकार 5.3- ईश्वरवाद और अशुभ की समस्या 5.4- रहस्यवाद- स्वरूप, विश्लेषण और मूल्यांकन	5	11
मॉड्यूल-6 **धार्मिक ज्ञान एवं एकता**	6.1- धार्मिक ज्ञान का स्वरूप 6.2- धार्मिक ज्ञान के सिद्धान्त 6.3- धर्मों में एकता-राधाकृष्णन एवं भगवान दास के विचार	5	11
मॉड्यूल-7 **धार्मिक-भाषा**	7.1- धार्मिक भाषा का स्वरूप 7.2- असंज्ञात्मक सिद्धान्त 7.3- संज्ञात्मक सिद्धान्त	5	11
योग		**45**	**99**

अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ (Textbooks/Reference/Resources)

क्र. सं.	पाठ्य-सामग्री	विवरण
1	आधार/पाठ्य ग्रंथ	
2	**संदर्भ-ग्रंथ**	1. Edwards, D.M.(1968): Philosophy of Religion, Progressive publisher, Calcutta, 2. Caird, John (1956) An Introduction to the Philosophy of Religion, Chatterjee and Co., Calcutta, . 3. Frederick,F.(1967) Basic Modern Philosophy of Religion, New York, Charles Sceribners, 4. Ducasse,C.J., (1953) A Philosophical Scrutiny of Religions, The Ronold Press Co., New York,. 5. मिश्र, हृदय नारायण (1997) धर्म-दर्शन परिचय, शेखर प्रकाशन, इलाहाबाद, 6. मसीह, या.(1973) धर्म दर्शन प्राच्य व पाश्चात्य, मोतीलाल बनारसीदास, पटना, 19737. 7. Dasgupta, S.N. (1974), Religions and The Rational Outlook, Motilal Banarasidass, Delhi, 1974.
3	ई-संसाधन	
4	अन्य	

तर्कशास्त्र
पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

पाठ्यचर्या का नाम: तर्कशास्त्र

पाठ्यचर्या का कोड: BAPHIL 241

क्रेडिट: 3

सेमेस्टर: IV

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइन व्याख्यान	45
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य	
कौशल विकास गतिविधियाँ	
कुल क्रेडिट घंटे	45

पाठ्यचर्या विवरण (Description of Course) :

तर्क मनुष्य के संवाद हेतु मौलिक माध्यम है। विचार करना मानव-स्वभाव है। विचार के माध्यम से ही वह नवीनताओं का अन्वेषण करता है। नवीन अन्वेषण से ही नवीन ज्ञान का प्रादुर्भाव होता है। नवीन ज्ञान से ही मनुष्य व्यावहारिक जीवन को तर्क की कसौटी पर स्थापित करता है। यद्यपि हमारी सार्वजनिक चर्चा और निजी तर्क में एक बुनियादी प्रशिक्षण के बिना हम तार्किक सिद्धांतों को आकारित करने में सक्षम नहीं हैं हैं। तर्कशास्त्र का यह पाठ्यक्रम छात्रों को तर्क और भाषा की मूल अवधारणाओं के साथ-साथ निपुण तर्क के सटीक मॉडल के साथ समझ विकसित करने में मदद करता है। इसमें सैद्धांतिक भाषा के उपयोग, भाषा के विभिन्न अनुप्रयोगों को प्रभावी ढंग से अलग करने का प्रबंधन करते हैं।

अपेक्षित अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes):

तर्कशास्त्र छात्रों को उन तर्कों में खामियों को समझने में सक्षम बनाती है जो हम अपने दैनिक जीवन में उपयोग करते हैं। तर्कशास्त्र बौद्धिक पवित्रता को संरक्षित करने के लिए एक मॉडल प्रस्तुत करता है। तर्कशास्त्र के संबंध में एक महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष अनुगत होता है कि यदि किन्हीं कारणों से मनुष्य की चिंतनप्रणाली अथवा तर्कप्रणाली में परिवर्तन या विकास हो, तो उसके अनुरूप तर्कशास्त्रीय मंतव्यों में भी परिवर्तन या विकास हो सकता है। तर्कशास्त्र के इतिहास में ऐसा भी होता है कि कालांतर में चिंतन के पुराने मानदंडों या नियमों में संशोधन आवश्यक हो जाता है; नए चिंतनप्रकारों की सृष्टि के साथ साथ नवीन तर्कशास्त्रीय नियमों का निरूपण भी अपेक्षित हो सकता है। यह नवीन संकल्पना छात्रों को नूतनता की ओर अग्रसारित करता है।

यह पाठ्यचर्या तर्क कौशल को बढ़ाता है और अनुमानों के आधार पर गलत तर्कों को निरस्त करने के लिए कौशल विकसित करता है। यह अंधविश्वासों को खत्म करने के लिए आधार बनाता है और मजबूत तर्कों के लिए मार्ग प्रशस्त करता है। यह पाठ्यचर्या अच्छे परिणाम में मदद करता है जो परिणामों के रूप में बेहतर अंक प्रदान करता है। यह छात्र को तर्कशील बनाने के लिए प्रशिक्षित करता है।

पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु (Contents of the Course)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	कुल घंटे	पाठ्यचर्या का प्रतिशत अंश
मॉड्यूल -1 **तर्कशास्त्र का स्वरूप**	1.1- तर्कशास्त्र की परिभाषा 1.2- युक्ति का स्वरूप 1.3- सत्यता और वैधता 1.4- युक्ति की वैधता 1.5- आगमन और निगमन	5	११
मॉड्यूल-2 **तर्क तथा भाषा**	2.1- तार्किक भाषा का अर्थ 2.2- तर्कशास्त्र का भाषा से संबंध 2.3- तार्किक भाषा के विभाग	5	11
मॉड्यूल-3 **निरुपाधिक तर्कवाक्य**	3.1- तर्कवाक्य और वाक्य में अंतर 3.2- तर्कवाक्य का वर्गीकरण- 3.2.1- संबंध के आधार पर 3.2.2-परिमाण के आधार पर 3.2.3-गुण के आधार पर	10	22

	3.3- व्याप्ति 3.4- परंपरागत विरोध-वर्ग 3.5- अव्यवहित अनुमान 3.5.1-परिवर्तन 3.5.2-प्रतिवर्तन 3.5.3-प्रतिपरिवर्तन 3.5.4 -विपरिवर्तन 3.6- सत्तात्मक दोष 3.7- निरुपाधिक तर्कवाक्यों का वेन रेखाचित्र द्वारा प्रतीकीकरण		
मॉड्यूल-4 **निरपेक्ष न्यायवाक्य**	4.1-न्यायवाक्य की परिभाषा, अवस्था, आकृति तथा वैध अवस्थाओं की ज्ञान की विधि 4.2- युक्ति का आकरगत प्रयोग 4.3- वेन रेखाचित्र द्वारा आधारवाक्यों का चित्रण 4.4- वैधता का नियम और तर्कदोष	10	22
मॉड्यूल-5 **प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र**	5.1- सरल एवं मिश्र वाक्य 5.1.1- संयोजन एवं सत्यता मूल्य 5.1.2- निषेध 5.1.3- विकल्पन 5.1.4- कोष्ठकों का प्रयोग 5.2- सोपाधिक कथन 5.2.1- शाब्दिक प्रतिपत्ति और वास्तविक प्रतिपत्ति में संबंध 5.3- युक्ति और युक्ति आकार 5.4- सत्यता सारिणी 5.5- विचार के नियम	10	22
मॉड्यूल-6 **मिल की प्रायोगिक विधियाँ**	6.1- अन्वय विधि 6.2- व्यतिरेक विधि 6.3- अन्वय व्यतिरेक विधि 6.4- परिवर्तन विधि 6.5- अवशेष विधि	3	7
मॉड्यूल-7 **सादृश्यानुमान**	7.1- सादृश्यानुमान तथा साधारण गणना 7.2- सादृश्यानुमानिक युक्तियों का मूल्यांकन	2	5
योग		**45**	**100**

अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ (Textbooks/Reference/Resources)

क्र. सं.	पाठ्य-सामग्री	विवरण
1	आधार/पाठ्य ग्रंथ	
	संदर्भ-ग्रंथ	1. Copi & Cohen (2002) Introduction to Logic, 11th Edition, Pearson Education 2. Copi & Cohen (2006) Tarkashastra: Eka Parichaya, Hindi Translation of Introduction to Logic, 11th Edition, Pearson Education 3. Strawson, P.F. (2006) Introduction to Logical Theory, London: Methuen & Co. 4. Cohen and Nagel (1990) Introduction to Logic & Scientific Method, Allied Publishers Ltd., New Delhi 5. Copi, I (2002) Tarkasastra Ka Parichaya (Hindi translation by Sangam Lal Pandey & Gorakh Nath Mishra), Asia Book Company, Allahabad,

		6. Chakraborti, Chhanda (2007) Logic: Informal, symbolic and Inductive, Prentice Hall of India, New Delhi 7. Seth, Shyam Kishor and Mishra, Neelima, (2004) Tarkshastra ek Adhunika Parichaya, Lokabharati, Allahabad 8. तिवारी, अविनाश (2016) तर्कशास्त्र के सिद्धान्त, सरस्वती प्रकाशन, इलाहाबाद
3	ई-संसाधन	
4	अन्य	

सामाजिक एवं राजनीतिक दर्शन
पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

पाठ्यचर्या का नाम : सामाजिक एवं राजनीतिक दर्शन

पाठ्यचर्या का कोड : BAPHIL 242

क्रेडिट : 3

सेमेस्टर : IV

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइनव्याख्यान	45
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य	
कौशल विकास गतिविधियाँ	
कुल क्रेडिटघंटे	**45**

पाठ्यचर्या विवरण (Description of Course) :

सामाजिक राजनीतिक दर्शन के अंतर्गत विद्यार्थी सामाजिक एवं राजनीतिक दर्शन की प्रकृति एवं क्षेत्र, व्यक्ति और समाज के बीच संबंध, व्यक्ति एवं राज्य, सामाजिक एवं राजनीतिक आदर्श यथा समानता, न्याय एवं स्वतंत्रता, राजनीतिक विचारधारा-अराजकतावाद, मार्क्सवाद, समाजवाद, अपराध, दंड, भ्रष्टाचार, हिंसा, प्राणदंड गांधी: सर्वोदय, रामराज्य, जातिव्यवस्था पर गांधी-अंबेडकर के विचार, मानववाद, धर्मनिरपेक्षतावाद, बहुसंस्कृतिवाद आदि समूचे विश्व एवं भारत में प्रसारित विभिन्न सामाजिक राजनीतिक सिद्धांतों का अध्ययन करने के साथ ही प्रमुख विचारक से परिचित होकर तथा उनके विचारों को आत्मसात करने के साथ ही एक संतुलित दृष्टिकोण विकसित करने में समर्थ होगा।

अपेक्षित अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes) :

विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम के अध्ययन उपरांत सामाजिक राजनीतिक दर्शन के समग्र प्रवृत्ति को समझने के साथ ही विभिन्न सामाजिक राजनीतिक विचारों को समझ पाएगा। सामाजिक राजनीतिक दर्शन के साथ अन्य भारतीय दर्शनों के साथ तुलना करने में समर्थ होगा तथा सामाजिक राजनीतिक आदर्शों को व्यावहारिक जीवन में या अपने जीवन में महत्त्व रेखांकित करने की स्थिति में होगा। विद्यार्थी शैक्षणिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक आयामों के प्रतिफलन के रूप में इसकी उपादेयता को सिद्ध कर सकेगा।

पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु (Contents of the Course)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	कुल घंटे	पाठ्यचर्या का प्रतिशत अंश
मॉड्यूल-1 **सामाजिक एवं राजनीतिक दर्शन की प्रकृति एवं विषयवस्तु**	1.1 - सामाजिक एवं राजनीतिक दर्शन की प्रकृति एवं क्षेत्र 1.2- व्यक्ति और समाज के बीच संबंध 1.3- व्यक्ति एवं राज्य	10	22
मॉड्यूल-2 **सामाजिक एवं राजनीतिक आदर्श**	2.1- स्वतंत्रता 2.2- समानता 2.3- न्याय 2.4- अधिकार	10	22
मॉड्यूल-3 **राजनीतिक विचारधारा**	3.1- लोकतन्त्र का अर्थ और महत्त्व 3.2- समाजवाद का अर्थ व प्रमुख रूप 3.3- द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद, वर्ग-संघर्ष 3.4- भारत में समाजवाद का विकास-प्रजातांत्रिक समाजवाद	10	22
मॉड्यूल-4 **प्रमुख राजनैतिक व सामाजिक विचार**	4.1- फासीवाद –राज्य की अवधारणा तथा मूल्यांकन 4.2- अराजकतावाद –स्वरूप तथा मूल्यांकन 4.3- सांविधानवाद-अर्थ और उद्देश्य	05	11

	4.4- गांधीवाद-सर्वोदय और सत्याग्रह		
मॉड्यूल -5 **प्रमुख राजनीतिक सिद्धांत**	5.1- मानववाद 5.2- धर्मनिरपेक्षतावाद 5.3- बहुसंस्कृतिवाद	**05**	**11**
योग		**45**	**100**

अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ (Textbooks/Reference/Resources)

क्र. सं.	पाठ्य-सामग्री	विवरण
1	आधार/पाठ्य ग्रंथ	
2	**संदर्भ-ग्रंथ**	1. George, Sabine.(1973). A History of Political Theory, Oxford IBH, 4th edition. 2. Raphael, D.D. (1978). The Problems of Political Philosophy. Oxford University Press. 3. Singh, B.N. Samaj Darshan Evam Rajaniti Darshan, Asha Prakashan,Varanasi. 4. Beck, R.N. (1964) Perspective in Social Philosophy, Machmillan. 5. मिश्रा, एच.एन. समाज दर्शन, इलाहाबाद. 6. Krishna, Daya. (1978). Social Philosophy, Past and Future, Indian Institute of Advanced Studies. 7. Van Dyke, Vernon.(1960). Political Science: A Philosophical Analysis, Stanford, Stanford University Press. 8. गाबा, ओ.पी. (2001). राजनीति सिद्धान्त की रूपरेखा, मयूर पेपर बैक्स, दिल्ली. 9. Gandhi, M.K. Hind Swaraj. 10. पाण्डेय, एस.एल. समाज दर्शन की एक प्रणाली, इलाहाबाद. 11. श्रीवास्तव, जे.एस. समाज दर्शन की भूमिका, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी. 12. सिंह, डॉ.शिवभानु. सामाजिक राजनीतिक दर्शन.
3	ई-संसाधन	
4	अन्य	

समकालीन भारतीय दर्शन
पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

पाठ्यचर्याका नाम : समकालीन भारतीय दर्शन

पाठ्यचर्या का कोड : BAPHIL 351

क्रेडिट: 3

सेमेस्टर : V

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइनव्याख्यान	45
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य	
कौशल विकास गतिविधियाँ	
कुल क्रेडिटघंटे	**45**

पाठ्यचर्या विवरण (Description of Course) :-

समकालीन भारतीय दर्शन के अंतर्गत समकालीन भारतीय दर्शन की पूर्वपीठिका एवं विशेषताएं, स्वामी विवेकानंद के ईश्वर, माया, मुक्ति, अध्यात्म, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, साधन-साध्य विवेक, कविगुरु रविंद्रनाथ टैगोर के अध्यात्म, माया, आत्मा, मानवतावाद एवं श्री अरविंद के समग्र योग की अवधारणा, अतिमानस, उद्विकास तथा के. सी. भट्टाचार्य के दर्शन की अवधारणा एवं डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के अध्यात्म, बौद्धिकता एवं अन्त:प्रज्ञा का अध्ययन विद्यार्थी करेंगे।

अपेक्षित अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes) :-

विद्यार्थी इस पाठ्यचर्या को पढ़ने के बाद समकालीन भारतीय दर्शन के महत्त्वपूर्ण विचारों से न सिर्फ परिचित होंगे बल्कि समकालीन भारतीय दर्शन की गौरवशाली परंपरा का अध्ययन कर उसे आत्मसात कर सकेंगे। विद्यार्थी इसका रचनात्मक चिंतन करते हुये इसके वर्तमान प्रासंगिकता एवं महत्त्व को बताने में समर्थ होगा एवं अपने जीवन में इसका व्यवहारिक धरातल पर संपरीक्षा भी करने की स्थिति में होगा।

पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु(Contents of the Course)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	कुल घंटे	कुल पाठ्यचर्या में प्रतिशत
मॉड्यूल-1	समकालीन भारतीय दर्शन की पूर्वपीठिका एवं विशेषताएं	06	13
मॉड्यूल-2 **स्वामी विवेकानंद**	2.1- माया 2.2- मुक्ति 2.3- अध्यात्म	05	11
मॉड्यूल-3 **महात्मा गांधी**	3.1- सत्य 3.2- अहिंसा 3.3- सत्याग्रह	08	18
मॉड्यूल-4 **रविंद्र नाथ टैगोर**	4.1- अध्यात्म 4.2- माया 4.3- आत्मा 4.4- मानवतावाद	05	11
मॉड्यूल-5 **श्रीअरविंद**	5.1- समग्र-योग की अवधारणा 5.2- अतिमानस 5.3- उद्विकास	05	11
मॉड्यूल-6 **भीम राव अंबेडकर**	6.1- धर्म, धम्म और सद्धर्म 6.2- सामाजिक न्याय	8	18
मॉड्यूल-7 **डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन**	7.1- अध्यात्म 7.2- बौद्धिकता 7.3- अन्त:प्रज्ञा	8	18
योग		**5**	**100**

अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ (Textbooks/Reference/Resources)

क्र. सं.	पाठ्य-सामग्री	विवरण
1	आधार/पाठ्य ग्रंथ	
2	**संदर्भ-ग्रंथ**	1. Mahadevan, T.M.P. and Saroja, G.V. Contemporary Indian Philosophy. 2. लक्ष्मी, सक्सेना. (1974). (सम्पा.) समकालीन भारतीय दर्श, उत्तर प्रदेश हिन्द्र ग्रन्थ अकादमी, लखनऊ. 3. Bhattacharya, Haridas. (1956). The cultural heritage of India, Vol, IVth Ramakrishana Mission Calcutta. 4. Lal, B.K.(2009). Contemporary Indian Philosophy (Hindi & English versions), Motilal Banarsidas, Varanasi. 5. Narvane, V.S. (1964). Modern Indian Thought (Hindi & English translation), Asia Publishing House, Bombay. 6. Srivastava, R.S. (1965). Contemporary Indian Philosophy, Munshi Ram Manohar Lal, Delhi.
3	ई-संसाधन	
4	अन्य	

समकालीन पाश्चात्य दर्शन
पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

पाठ्यचर्या का नाम: समकालीन पाश्चात्य दर्शन

पाठ्यचर्या का कोड: BAPHIL 352

क्रेडिट: 3

सेमेस्टर: V

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइन व्याख्यान	45
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य	
कौशल विकास गतिविधियाँ	
कुल क्रेडिट घंटे	45

पाठ्यचर्या विवरण (Description of Course) **:**

इस पाठ्यचर्या का उद्देश्य छात्रों को समकालीन पाश्चात्य दर्शन के विश्लेषणात्मक प्रवृत्ति में अभिरुचि का संचरण करना है। 20 वीं शताब्दी के पश्चिमी दर्शनशास्त्र के महत्त्वपूर्ण विचारों से अवगत करना है, जिसके कारण भाषाई विश्लेषण, तर्क के संदर्भ में क्रांतिकारी अवधारणा और दर्शन का गणितीय विश्लेषण की प्रधानता रही। इस परंपरा ब्रैडले, सी॰ एस॰ पियर्स, विलियम जेम्स, जॉन डेवी आदि ने अर्थक्रियावाद को स्थापित किया, वहीं हुर्सरल ने दर्शनशास्त्र को नए विचारों से पुनर्गठन करने का प्रयास किया। अस्तित्ववादी विचारकों ने दर्शन के स्वरूप का पुनर्पाठ किया। मार्क्स के वैचारिक आंदोलन से न तो केवल विश्व का स्वरूप में परिवर्तन आया वरन दर्शनशास्त्र का स्वरूप भी आंदोलित हुआ। दुनिया में आज भी इस काल को दार्शनिक उर्वर परंपरा के रूप में देखा जाता है।

अपेक्षित अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes):

इस पाठ्यचर्या में समकालीन पाश्चात्य दर्शन के प्रवृत्तियों को सीखने के परिणामों को ध्यान में रखकर बनाया गया है। पश्चिमी दर्शन में विचार के सबसे महत्त्वपूर्ण और प्रभावशाली विचारकों का दार्शनिक परिचय से छात्र अवगत होंगे। युवा दिमाग को पाश्चात्य परंपरा से जुड़े बुनियादी विचारों के साथ जोड़ना, जिससे महत्त्वपूर्ण और चिंतनशील वैचारिकी तैयार हो सके। इस पाठ्यचर्या से छात्रों को सरल विचारों से जटिल विचारों की ओर अग्रसारित करेगा।

पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु (**Contents** of the **Course**)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	कुल घंटे	कुल पाठ्यचर्या में प्रतिशत
मॉड्यूल-1 **एफ॰ एच॰ ब्रैडले का दर्शन**	1.1- प्राथमिक तथा गौण गुण, द्रव्यता एवं विशेषणता, संबंध एवं गुण, कारणता 1.2- आभास और सत् 1.3- निरपेक्ष सत् विचार	**7**	**16**
मॉड्यूल-2 **अर्थक्रियावाद**	2.1- **चार्ल्स सैंडर्स पर्स** 2.1.1- पियर्स का अर्थ सिद्धांत 2.2- **विलियम जेम्स** 2.2.1-उत्कट अनुभववाद 2.2.2-सत्ता विचार 2.2.3-सत्यता का सिद्धान्त **2.3-जॉन डूवी** 2.3.1-उपकरणवाद 2.3.2-प्रकृतिवाद	**8**	**18**
मॉड्यूल-3 **मार्क्सवाद**	3.1- द्वंद्वात्मक भौतिकवाद 3.2- क्रांति 3.3- राज्य	10	**22**

मॉड्यूल-4 **फेनामेनोलाजी**	4.1-फेनोमेनोलॉजी की प्रमुख अवधारणाएँ 4.2- असंबंधन 4.3- अपचयन 4.4- तात्त्विक पक्ष	10	**22**
मॉड्यूल-5 **अस्तित्ववाद**	6.1- अस्तित्ववाद की मुख्य विशेषताएं 6.2- अस्तित्ववाद के प्रमुख विचारक 6.3- स्वतंत्रता और उत्तरदायित्व पर सार्त्र के विचार	**10**	**22**
योग		**45**	**100**

अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ (Textbooks/Reference/Resources)

क्र. सं.	**पाठ्य-सामग्री**	**विवरण**
1	आधार/पाठ्य ग्रंथ	
2	**संदर्भ-ग्रंथ**	1. Passmore, J. (1966) A Hundred Years of Philosophy, Penguin Books, (Hindi Translation by C.M. Sharma, Hindi Prakashan Vibhaga Rajasthan Vishwavidyalay, Jaipur, 2. Passmore, J(1968) Recent Philosophers, Penguin Books 3. Copleston : Contemporary Philosophy. 4. Datta, D. M. (1970) Chief Currents of Contemporary Philosophy, The University of Calcutta 5. Lal, B.K. (1996) Samakalin Pascatya Darsan (Hindi), Motilal Banarsidas, 6. Saxena, Lakshmi, ed. (1991) Samakalina Pasctya Darśana (Hindi), U.P. Hindi Sansthan 7. Mishra, Nityanand: (2006) Samakalina Pascatya Darśana (Hindi), Motilal Banarsidas 8. F.H., Bradely(1969) Appearance and Reality, Oxford University Press, Oxford, London, New York 9. Tiwari, K.N. (1986) Tattva-mimamsa evam Jnanamimamsa, M.L.B.D., Delhi
3	ई-संसाधन	
4	अन्य	

ग्रंथ आधारित अध्ययन-तर्कभाषा (केवल प्रमाण प्रकरण)
पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

पाठ्यचर्या का नाम: ग्रंथ आधारित अध्ययन -तर्कभाषा (केवल प्रमाण प्रकरण)

पाठ्यचर्या का कोड: BAPHIL 353

क्रेडिट: 3

सेमेस्टर: V

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइन व्याख्यान	45
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य	
कौशल विकास गतिविधियाँ	
कुल क्रेडिट घंटे	45

पाठ्यचर्या विवरण (Description of Course):

'केशव मिश्र' अपने समय के मिथिला के श्रेष्ठ नैयायिकों में अन्यतम हैं। इन्होंने 'तर्कभाषा' नामक एक प्रकरण ग्रन्थ की रचना की है जो न्यायदर्शन के महानद में प्रवेश पाने के लिए सुडौल सोपान के समान है। 'तर्कभाषा' की रचना के इस उद्देश्य की पूर्ति में 'तर्कभाषा' पूर्णरूप से सक्षम सिद्ध हुई है। न्यायदर्शन में कहे गये बारह प्रमेयों में चौथे प्रमेय 'अर्थ' के मध्य वैशेषिक दर्शन के द्रव्य आदि छः पदार्थों का परिगणन कर इस ग्रन्थ में उनका भी सुबोध वर्णन किया गया है। न्यायदर्शन तथा वैशेषिक दर्शन के ग्रन्थों में अनेकत्र बिखरे हुये कतिपय विशेष ज्ञातव्य विषयों का संक्षिप्त एवं सुन्दर संकलन कर उन्हें परम सुगम बना ग्रन्थकार ने केवल छात्रों को ही नहीं अपितु विद्वानों की भी प्रशंसनीय सहायता की है। कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि उचितरूप से अध्ययन कर यदि इस ग्रन्थ को अभ्यस्त रखा जाय तो न्याय, वैशेषिक दोनों दर्शनों के समग्र प्रमेय करामलकवत् हो सकते हैं। इस गुण के कारण ही यह ग्रन्थ अपने देश की विभिन्न परीक्षाओं के पाठयक्रम में रखा गया है और इस समय के अनेक लोगों ने इस पर नई-नई व्याख्यायें लिखी हैं एवं हिन्दी तथा अंग्रेजी भाषाओं में इसका अनुवाद किया है। इस ग्रन्थ पर अनेक टीकाओं का लिखा जाना इसकी उपादेयता और लोकप्रियता का प्रबल साक्षी है।

अपेक्षित अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes):

तर्कभाषा न्यायप्रधान न्यायवैशेषिक प्रस्थानात्मा प्रकरण ग्रन्थ है। क्योंकि यह न्यायसम्मत षोडश पदार्थों के निरूपण क्रम में प्रमेय के अङ्ग अर्थ के अन्तर्गत आत्मपदार्थ की विवेचना प्रस्तुत करता है तथा समन्वित प्रस्थान को पुष्ट करता है। समानतन्त्रसिद्धान्त के रूप में श्री मिश्र ने 'यथार्थानुभवः प्रमा' निर्वचन द्वारा अयथार्थस्वरूप संशय, विपर्यय एवं तर्कज्ञानों का वारण किया है। विपर्ययात्मा की अयथार्थता 'तदभाववति तत्प्रकारकं ज्ञानमप्रमा' निर्वचन से सुस्पष्ट है। संशयात्मा की अयथार्थता भी उसके अनिश्चयात्मक होने से विदित होती है। तर्कात्मा की अयथार्थता को न्यायसूत्र में संकेतित किया गया है- अविज्ञाततत्त्वेऽर्थे कारणोपपत्तितस्तत्त्वज्ञानार्थमूहस्तर्कः। तर्कज्ञान द्वारा एक पक्ष का समर्थन मात्र पुरस्कृत होता है विनिश्चायन नहीं अतएव यह भी अयथार्थात्मा ही है। प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान एवं शब्द प्रमाणों का सप्रभेद लक्षण विवेचित करते हैं। उन्होंने षोढासन्निकर्ष एवम् अलौकिक सन्निकर्ष के साथ निर्विकल्प एवं सविकल्प प्रत्यक्षों की परीक्षा की है। क्रमशः साङ्गोपाङ्ग अनुमानप्रमाण, उपमाननिरूपण, शब्दनिरूपण, अर्थापत्ति समीक्षण के साथ अभाव (अनुपलब्धि) प्रमाण की समीक्षा के अनन्तर श्री मिश्र ने प्रामाण्यवाद की दार्शनिक अवधारणा की समीक्षा अत्यन्त सुबोध रीति से उपस्थित की है।

पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु (Contents of the Course)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	व्याख्यान कुल घंटे	पाठ्यचर्या का प्रतिशत अंश
मॉड्यूल-1	1.1- प्रमाण का लक्षण 1.2- प्रमा का लक्षण 1.3- करण का लक्षण	10	22
मॉड्यूल-2	2.1- कारण का लक्षण 2.2- कारणत्व और कार्यत्व का लक्षण 2.3- कारण के व्यतिरेकघटित लक्षण का खण्डन	10	22
मॉड्यूल-3	3.1- कारण के भेद 3.2- अयुतसिद्ध का लक्षण और उदाहरण 3.3- समवायिकारण का लक्षण और उदाहरण	10	22

मॉड्यूल-4	4.1- द्रव्य के स्वगत गुण के प्रति कारणता पर आक्षेप तथा उसका परिहार 4.2- द्रव्य का लक्षण और उसकी परीक्षा	10	**22**
मॉड्यूल-5	5.1- असमवायिकारण का लक्षण तथा उदाहरण 5.2- निमित्तकारण का लक्षण तथा उदाहरण 5.3- प्रमाण के 'अनधिगतार्थगन्तृत्व' लक्षण का खण्डन	5	**12**
योग		**45**	**100**

अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ (Textbooks/Reference/Resources)

क्र. सं.	**पाठ्य-सामग्री**	**विवरण**
1	**आधार/पाठ्य ग्रंथ**	**मिश्र, केशव, तर्कभाषा**
2	संदर्भ-ग्रंथ	1. तर्कभाषा, केशवमिश्र, काशीसंस्कृतग्रन्थावली 155, चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, संस्करण, 2006. 2. तर्कभाषा, केशवमिश्र, चौखम्भा सुरभारती ग्रन्थमाला 74, वाराणसी, पुनर्मुद्रित संस्करण, 2009.
3	ई-संसाधन	
4	अन्य	

अधिनीतिशास्त्र
पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

पाठ्यचर्याका नाम : अधिनीतिशास्त्र

पाठ्यचर्या का कोड : BAPHIL 354

क्रेडिट : 3

सेमेस्टर : V

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइनव्याख्यान	45
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य	
कौशल विकास गतिविधियाँ	
कुल क्रेडिटघंटे	45

पाठ्यचर्या विवरण (Description of Course) :

इस पाठ्यचर्या के अंतर्गत अधिनीतिशास्त्र : परिभाषा, स्वरूप मूल समस्याएँ, अधिनीतिशास्त्र एवं मानकीय नीतिशास्त्र, प्रकृतिवाद, निर्प्रकृतिवाद, जी.ई. मूर : शुभ का अर्थ प्रकृतिवाद तर्कदोष, संज्ञानवाद, असंज्ञानवाद, संवेगवाद : परिचय, आधारभूत मान्यताएँ, उद्भव एवं विकास, रूडोल्फ कार्नेप, सी.एल. स्टीवेन्सन, ए.जे. एयर, परामर्शवाद : परिचय, आर.एम. हेयर, पी.एच. नावेलस्मिथ, नव्य प्रकृतिवाद, का अध्ययन करेंगे।

अपेक्षित अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes) :

विद्यार्थी इस पाठ्यचर्या के अध्ययन उपरांत अधिनीतिशास्त्र के विभिन्य आयामों से न सिर्फ परिचित हो सकेगा वरन् संवेगवाद, परामर्शवाद, प्रकृतिवाद जैसे अत्यंत महत्त्वपूर्ण विषयों का अध्ययन कर अपने मस्तिष्क में तीक्ष्ण बुद्धि के विकास के साथ ही नैतिकता के व्यवहारिक धरातल पर जीवन के महत्त्वपूर्ण प्रश्नों का मूल्यांकन एवं उसका उत्तर प्राप्त करने में समर्थ हो सकेगा।

पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु(Contents oftheCourse)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	व्याख्यान कुल घंटे	पाठ्यचर्या का प्रतिशत अंश
मॉड्यूल-1 **अधिनीतिशास्त्र का स्वरूप**	अधिनीतिशास्त्र : 1.1 परिभाषा 1.2 स्वरूप 1.3 मूल समस्याएँ 1.4 अधिनीतिशास्त्र एवं मानकीय नीतिशास्त्र 1.5 प्रकृतिवाद	10	22
मॉड्यूल-2 **निर्प्रकृतिवाद**	2.1 निर्प्रकृतिवाद 2.2 जी.ई. मूर : शुभ का अर्थ, प्रकृतिवाद तर्कदोष 2.3 संज्ञानवाद 2.4 असंज्ञानवाद	10	22
मॉड्यूल-3 **संवेगवाद**	3.1 संवेगवाद : परिचय 3.2 आधारभूत मान्यताएँ 3.3 उद्भव एवं विकास 3.4 रूडोल्फ कार्नेप 3.5 सी.एल.स्टीवेन्सन 3.6 ए.जे. एयर	10	22
मॉड्यूल-4 **परामर्शवाद**	4.1 परामर्शवाद : परिचय 4.2 आर.एम. हेयर 4.3 पी.एच.नावेलस्मिथ	10	22

मॉड्यूल-5 **नव्य प्रकृतिवाद**	5.1 नव्य प्रकृतिवाद	05	12
योग		**45**	**100**

अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ (Textbooks/Reference/Resources)

क्र. सं.	पाठ्य-सामग्री	विवरण
1	आधार/पाठ्य ग्रंथ	
2	**संदर्भ-ग्रंथ**	1. वर्मा, वेद प्रकाश. अधिनीतिशास्त्र के मुख्य सिद्धांत. 2. तिवारी, प्रो. जटाशंकर. अधिनीतिशास्त्र, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद. 3. मिश्र, नित्यानंद. नीतिशास्त्र. 4. मिश्र, एच,एन. नीतिशास्त्र, शेखर प्रकाशन, इलाहाबाद. 5. Maitra, S.K. (1978). The Ethics of the Hindus, University of Calcutta. 6. Rogers, R.A.P. A Short History of Ethics. 7. Joshi, Shanti. (1963). Nitishastra, Rajkamal Prakashana Pvt.Limited, Delhi. 8. मिश्र, डॉ. नित्यानंद (2005). (सिद्धान्त तथा प्रयोग), मोतीलाल बनारसीदास. 9. वर्मा, डॉ. वेद प्रकाश. (1977). नीतिशास्त्र के मूल सिद्धान्त, एलाइड पब्लिकेशन, दिल्ली. 10. वर्मा, डॉ. अशोक कुमार. (1977) नीतिशास्त्र के मूल सिद्धान्त, एलाइड पब्लिकेशन, दिल्ली. 11. पांडेय, संगमलाल. (2005). नीतिशास्त्र का सर्वेक्षण, सेन्ट्रल पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद. 12. पाठक, डॉ. दिवाकर. (1974). भारतीय नीतिशास्त्र, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी.
3	ई-संसाधन	
4	अन्य	

विज्ञान और अध्यात्म का दर्शन
पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

पाठ्यचर्या का नाम: विज्ञान और अध्यात्म का दर्शन

पाठ्यचर्या का कोड: BAPHIL 361

क्रेडिट: 3

सेमेस्टर: VI

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइन व्याख्यान	45
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य	
कौशल विकास गतिविधियाँ	
कुल क्रेडिट घंटे	45

पाठ्यचर्या विवरण(Description of Course):

विज्ञान का दर्शन; विज्ञान की नींव, विधियों और निहितार्थों से संबंधित दर्शन की एक शाखा है। इसके अध्ययन के मूल प्रश्न विज्ञान वैज्ञानिक सिद्धांतों की विश्वसनीयता और विज्ञान के परम उद्देश्य से संबंधित हैं। विज्ञान का दर्शन विज्ञान के तत्वमीमांसा, ज्ञानमीमांसा और अर्थ संबंधी पहलुओं पर केंद्रित है। नैतिक मुद्दों जैसे जैवनैतिकता और वैज्ञानिक कदाचार को अक्सर विज्ञान के दर्शन के बजाय नैतिकता या विज्ञान का अध्ययन माना जाता है। विज्ञान के दर्शन से संबंधित कई केंद्रीय समस्याओं के बारे में दार्शनिकों के बीच कोई आम सहमति नहीं है कि क्या विज्ञान अप्राप्य वस्तुओं के विषय में यथार्थ को प्रकट कर सकता है और क्या वैज्ञानिक तर्क को उचित ठहराया जा सकता है। समग्र रूप से विज्ञान के बारे में इन सामान्य प्रश्नों के अतिरिक्त, दार्शनिक उन समस्याओं पर विचार करते हैं जो विशेष विज्ञानों (जैसे जीव विज्ञान या भौतिकी) पर लागू होती हैं। विज्ञान के कुछ चिंतक भी दर्शन के बारे में निष्कर्ष तक पहुंचने के लिए विज्ञान में समकालीन परिणामों का उपयोग करते हैं।

अपेक्षित अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes):

एक वैज्ञानिक विश्वदृष्टि की स्थापना आधुनिक वैज्ञानिक दर्शन को 1930 के दशक में तार्किक अनुभववाद के उदय के साथ शुरू किया गया था, लेकिन आवश्यक कार्य आध्यात्मिक अध्ययनों को खत्म करना था। यह विज्ञान पर आधारित एक नया विश्व दृष्टिकोण स्थापित करना था। इस प्रयोजन के लिए, एक शुष्क तर्कों का सहारा लिया जाता है जो अनुभवजन्य और अनुभवजन्य प्रस्तावों को मान्यता के लिए एकमात्र आधार के रूप में अनुमति देता है, और इसलिए, दूसरों से अनुभवजन्य प्रस्तावों को अलग करने के लिए मापदंड, तथाकथित अनुभवजन्य अर्थ सत्यापन मानदंडों को निर्दिष्ट करने की आवश्यकता है। वैज्ञानिक सिद्धांत की संरचना वैज्ञानिक दर्शन का मूल प्रश्न यह है कि वास्तविक वैज्ञानिक सिद्धांत का निर्माण कैसे किया जाता है, इसकी संरचना कैसे की जाती है और यह वस्तु के लिए कैसे उपयुक्त है। मिल के बाद से, वैज्ञानिक तरीकों को अनुभव से अनिवार्य रूप से प्रेरण कहा गया है। हालांकि, वर्तमान में, प्रेरण का औचित्य बहुत मुश्किल माना जाता है। इसके अलावा, यह देखना असंभव है कि आधुनिक विज्ञान का निर्माण केवल प्रेरण द्वारा किया गया है। यह सिद्धांत कि मनुष्य के कार्य स्वतंत्र नहीं होते स्वतंत्रता का मुद्दा भी एक महत्वपूर्ण विषय है। जबकि न्यूटनियन भौतिकी स्पष्ट रूप से नियतात्मक प्रकृति दिखाती है, आधुनिक क्वांटम यांत्रिकी एक गैर-नियतात्मक स्थिति में प्रतीत होती है। इस संघर्ष की व्याख्या कैसे करें यह विज्ञान के सार से सीधे जुड़ा हुआ मुद्दा है।

पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु (Contents of the Course)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	कुल घंटे	पाठ्यचर्या का प्रतिशत अंश
मॉड्यूल-1	1. विज्ञान का स्वरूप 2. पूर्व और पश्चिम में विज्ञान का इतिहास 3. विज्ञान तथा गणित के मध्य संबंध 4. विज्ञान और तकनीक 5. प्राकृतिक विज्ञान और सामाजिक विज्ञान 6. विज्ञान और प्रौद्योगिकी के दर्शन की प्रकृति और क्षेत्र	15	34
मॉड्यूल-2	1. ज्ञान की प्रकृति 2. वैज्ञानिक ज्ञान की प्रकृति और वस्तुएं 3. वैज्ञानिक पद्धति के लक्षण	10	22

	4. वैज्ञानिक सिद्धांतों के सत्यापन और निर्माण में प्रयोगों की भूमिका		
मॉड्यूल-3	1. ब्रह्मांड की उत्पत्ति के वैज्ञानिक सिद्धान्त 2. बिग बैंग सिद्धान्त 3. कार्य-कारण की अवधारणाएं 4. साइबरनेटिक्स के लक्षण, 5. आदमी तथा मशीन	10	**22**
मॉड्यूल-4	निम्नलिखित अकादमिककार्यों के आलोक में वैज्ञानिक प्रगति की आध्यात्मिक समझ- 1. स्वामी विवेकानंद का राज-योग (केवल परिचयात्मक भाग) 2. जे कृष्णमूर्ति, (शिक्षा) (केवल द्वितीय अध्याय) 3. श्रीअरबिंद की सावित्री (केवल अध्याय X, का सर्ग II और III)	10	**22**
योग		**45**	**100**

अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ (Textbooks/Reference/Resources)

क्र. सं.	**पाठ्य-सामग्री**	**विवरण**
1	आधार/पाठ्य ग्रंथ	
2	**संदर्भ-ग्रंथ**	1. Hawking, S.W. , A Brief History of Time (1988) 2. Caws, Peter, The Philosophy of Science (Van Nostrand Company Inc. 1965) 3. George, F.H. Philosophical Foundations of Cybernetics (ABCOS Press 1979). 4. Makarov, I.M, Cybernetics of Living Matter (L Mir publishers Moscow 1987) 5. Swami Vivekanand, Rajayoga, Ramakrishna Mission, Nagpur, 1990. 6. Sri Aurobindo: Savitri, Sri Aurobindo Asram, Pondicherry. 7. J. Krishnmurti, On Education, Krishanmurti Foundation, Rajghat, Varanasi 8. Russell, B., The Scientific Outlook (Indian Reprint 2010 London, New York.) 9. Bloom E. Floyd (ed.) Frontiers in Science and Technology (Prentice-Hall of India, New Delhi, 1985).
3	ई-संसाधन	
4	अन्य	

विश्व-धर्म
पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

पाठ्यचर्याका नाम : विश्व-धर्म

पाठ्यचर्या का कोड: BAPHIL 362

क्रेडिट : 3

सेमेस्टर : VI

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइन व्याख्यान	45
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य	
कौशल विकास गतिविधियाँ	
कुल क्रेडिट घंटे	45

पाठ्यचर्या विवरण (Description of Course) :

इस पाठ्यचर्या का उद्देश्य छात्रों को धर्म की मूल अवधारणाओं और इसके दार्शनिक महत्त्व से परिचित कराना है, इसमें छात्र विश्व धर्म का परिचय एवं अर्थ, विश्व धर्म की प्रासंगिकता, सनातन धर्म, सनातन धर्म का आधार, ईश्वर विचार, आत्मा विचार, जगत विचार, कर्म-सिद्धान्त, पुनर्जन्म, पुरुषार्थ, मोक्ष का स्वरूप, भक्तियोग, कर्मयोग, ज्ञानयोग, वर्णाश्रम व्यवस्था, पारसी धर्म के अंतर्गत पारसी धर्म का आधार, ईश्वर विचार, अशुभ की समस्या, अग्निपूजा की महत्ता, जैन धर्म के अंतर्गत परिचय, द्रव्य सम्बन्धी विचार, पुद्गल, आकाश, काल, जीव सम्बन्धी विचार, बन्धन सम्बधी विचार, बन्धन और मोक्ष विचार, अनीश्वरवाद, बौद्ध धर्म के अंतर्गत बौद्ध धर्म का आधार, चार आर्य सत्य, तत्वमीमांसा की प्रतिरोधी प्रवृत्ति, निर्वाण का स्वरूप, अष्टांगिक मार्ग, अनात्मवाद, अनीश्वरवाद, हीनयान एवं महायान में अन्तर, यहूदी धर्म के अंतर्गत परिचय, ईश्वर विचार, नीतिशास्त्र, यहूदी धर्म का महत्त्व, ईसाई धर्म के अंतर्गत ईसाई धर्म का आधार, ईसाई धर्म में ईश्वर विचार, जगत् का स्वरूप, पाप की अवधारणा, मानव का स्वरूप, अशुभ की समस्या एवं उसका हल, ईसाई धर्म का नीतिशास्त्र, कन्फ्यूसियस धर्म के अंतर्गत कन्फ्यूसियस धर्म का आधार, ईश्वर सम्बन्धी चार, मानव सम्बन्धी विचार, मानवतावाद, कन्फ्यूसियस के सिद्धान्त, शिन्तो धर्म के अंतर्गत शिन्तो धर्म का आधार, ईश्वर विचार, आचार शक्ति, ताओ धर्म के अंतर्गत ताओ धर्म का आधार, ताओ विचार, देह सम्बन्धी विचार, ताओ धर्म में प्रकृति का स्थान इस्लाम धर्म का अध्ययन, इस्लाम का ईश्वर विचार, ईश्वर और विश्व, ईश्वर और मानव, इस्लाम के धार्मिक विचार, इस्लाम धर्म की विशेषताएँ , सिख धर्म के अंतर्गत परिचय, ईश्वर विचार, जगत और मानव सम्बन्धी विचार, सिख धर्म के पाँच चिन्ह, मुक्ति के मार्ग का अध्ययन करेंगे।

अपेक्षित अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes) :-

विश्वधर्म पाठ्यचर्या के अध्ययन द्वारा छात्रों को धार्मिक मुद्दों की एक सामान्य समझ प्राप्त होगी। वे धार्मिक मुद्दों के बारे में गंभीर रूप से सोचना सीखेंगे। सामान्य रूप से रिलीजन और धर्म के बेहतर समझ विकसित होने के साथ ही इनके पाश्चात और भारतीय संदर्भ से परिचित होंगे। यह पाठ्यचर्या कई प्रचलित भ्रांतियों को दूर करेगा, छात्रों को जीवन में विभिन्न धर्मों के तर्कसंगत पहलू की समझ और उनकी भूमिकाएँ निर्दिष्ट करेगा। यह पाठ्यक्रम छात्रों को समानता के दृष्टिकोण और सम्मान की भावना को विकसित करने में मदद करेगा और उनके व्यवहार में धार्मिक अनन्यता को पोषित करेगा। छात्रों और शिक्षकों को धर्मनिरपेक्षता, और मानवीय नैतिकता का बेहतर स्वरूप खोजने में संलग्न करेगा। विभिन्न धर्मों के अध्ययन के द्वारा विद्यार्थी में सर्वधर्मसमभाव का भाव विकसित होने के साथ ही वर्तमान में फैली वैश्विक सांप्रदायिकता की चुनौतियों से निपटने में समर्थ होगा।

पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु (Contents of the Course)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	कुल घंटे	पाठ्यचर्या का प्रतिशत अंश
मॉड्यूल-1 **विश्व धर्म का स्वरूप तथा सनातन धर्म**	1.1 विश्व धर्म : परिचय एवं अर्थ 1.2 विश्व धर्म की प्रासंगिकता **सनातन धर्म** • सनातन धर्म का आधार • ईश्वर विचार • आत्मा विचार • जगत विचार • कर्म सिद्धान्त • पुनर्जन्म एवं पुरुषार्थ	5	11

	• **मोक्ष का स्वरूप** • भक्तियोग • कर्मयोग • ज्ञानयोग • वर्णाश्रम व्यवस्था		
मॉड्यूल-2 **पारसी धर्म**	**पारसी धर्म :** • पारसी धर्म का आधार • ईश्वर विचार • अशुभ की समस्या • अग्निपूजा की महत्ता	4	8
मॉड्यूल-3 **जैन धर्म**	**जैन धर्म :** • परिचय • द्रव्य सम्बन्धी विचार • पुद्गल • आकाश • काल • जीव सम्बन्धी विचार • बन्धन सम्बधी विचार • बन्धन और मोक्ष विचार • अनीश्वरवाद	3	6
मॉड्यूल-4 **बौद्ध धर्म**	**बौद्ध धर्म : बौद्ध धर्म का आधार** • चार आर्य सत्य • तत्वमीमांसा की प्रतिरोधी प्रवृत्ति • निर्वाण का स्वरूप • अष्टांगिक मार्ग • अनात्मवाद • अनीश्वरवाद • हीनयान एवं महायान में अन्तर	**6**	**13**
मॉड्यूल-5 **यहूदी धर्म**	**यहूदी धर्म :** • परिचय • ईश्वर विचार • नीतिशास्त्र • यहूदी धर्म का महत्त्व	2	4
मॉड्यूल-6 **ईसाई धर्म**	**ईसाई धर्म :** • ईसाई धर्म का आधार • ईसाई धर्म में ईश्वर विचार • जगत् का स्वरूप • पाप की अवधारणा • मानव का स्वरूप • अशुभ की समस्या एवं उसका हल • ईसाई धर्म का नीतिशास्त्र	**6**	14
मॉड्यूल-7 **कन्फ्यूसियस धर्म, शिन्तो धर्म तथा ताओ धर्म**	**कन्फ्यूसियस धर्म :** • कन्फ्यूसियस धर्म का आधार • ईश्वर सम्बन्धी विचार	9	20

	• मानव सम्बन्धी विचार • मानवतावाद • कन्फ्यूसियस के सिद्धान्त **शिन्तो धर्म :** • शिन्तो धर्म का आधार • ईश्वर विचार • आचार शक्ति **ताओ धर्म :** • ताओ धर्म का आधार • ताओ विचार • देह सम्बन्धी विचार • ताओ धर्म में प्रकृति का स्थान		
मॉड्यूल-8 **इस्लाम धर्म**	**इस्लाम धर्म :** • इस्लाम धर्म का अध्ययन • इस्लाम का ईश्वर विचार • ईश्वर और विश्व • ईश्वर और मानव • इस्लाम के धार्मिक विचार	5	12
मॉड्यूल-9 **सिख पंथ**	**सिख पंथ :** • परिचय • ईश्वर विचार • जगत और मानव सम्बन्धी विचार • सिख धर्म के पाँच चिन्ह • मुक्ति के मार्ग	5	12
योग		**45**	**100**

अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ (Text books/Reference/Resources)

क्र. सं.	पाठ्य-सामग्री	विवरण
1	आधार/पाठ्य ग्रंथ	
2	**संदर्भ-ग्रंथ**	1. Edwards, D.M.(1968). Philosophy of Religion. Calcutta : Progressive publisher. 2. Caird, John.(1956).An Introduction to the Philosophy of Religion. Calcutta : Chatterjee and Co. 3. Frederick, F.(1967).Basic Modern Philosophy of Religion.. New York :Charles Sceribners. 4. Ducasse, C.J.(1953). A Philosophical Scrutiny of Religions.New York : The Ronold Press Co. 5. मसीह, याकूब.(2014).तुलनात्मक धर्म दर्शन. दिल्ली : मोतीलाल बनारसीदास. 6. बलदेव, उपाध्याय : धर्म और दर्शन. 7. पाण्डेय, ऋषिकांत : धर्म दर्शन, नई दिल्ली, पियर्सन प्रकाशन. 8. डॉ. रमेश : धर्म-दर्शन, सामान्य एवं तुलनात्मक, मोती लाल बनारसी दास पब्लिशर्स. 9. दुबे, प्रो. श्री प्रकाश, श्रीवास्तव अविनाश.(2008).तुलनात्मक धर्म दर्शन. सागर विश्वविद्यालय प्रकाशन. 10. सिन्हा, हरेन्द्र प्रसाद.(1962).धर्म दर्शन की रूपरेखा. दिल्ली : मोतीलाल बनारसी दास.

		11. मसीह, याकूब.(1973).धर्म दर्शन: परिचय. पटना : मोतीलाल बनारसीदास. 12. मिश्र, हृदय नारायण. (1967). धर्म दर्शन : परिचय. इलाहाबाद : शेखर प्रकाशन.
3	ई-संसाधन	
4	अन्य	

भाषा, सत्य और तर्क ग्रंथ आधारित अध्ययन
पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

पाठ्यचर्या का नाम: भाषा, सत्य और तर्क, ग्रंथ आधारित अध्ययन
Language, Truth and Logic: A.J. Ayer

पाठ्यचर्या का कोड: BAPHIL 363

क्रेडिट: 3

सेमेस्टर: VI

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइन व्याख्यान	45
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य	
कौशल विकास गतिविधियाँ	
कुल क्रेडिट घंटे	45

पाठ्यचर्या विवरण (Description of Course):

तार्किक भाववाद में जिस प्रकार के विचार को प्रश्रय मिला, उसी का विचार इंगलैंड में भी पनपा-विशेषतः ए० जे० एयर के विचारों में। एयर ने अपने को ताकिक भाववादी नहीं कहा, बल्कि उसके विचारों की विशिष्टता, ब्रिटिश दर्शन की परम्परा के अनुसार, तार्किक भाववादी विचारों को अनुभववाद के संदर्भ में समंजस्य के रूप में है। यही कारण है कि उनके विचारों को तार्किक अनुभववाद (Logical Empiricism) कहा जाता है। 1936 में एयर ने अपनी पुस्तक 'Language Truth and Logic' लिखी। उनके विचारों पर कुछ टिप्पणियाँ आलोचनायें हुई, जिनके आलोक में एयर ने अपनी पुस्तक का परिवर्तित रूप 1946 में प्रकाशित किया।

अपेक्षित अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes):

एयर के तार्किक अनुभववाद के मूल में अर्थ का सत्यापन सिद्धान्त (The Principle of Verification) ही है। तार्किक भाववाद के समान एयर भी स्वीकारते हैं कि यह सिद्धान्त एक ऐसा मापदण्ड प्रस्तुत करता है जिससे वाक्यों की अर्थपूर्णता एवं अर्थहीनता में भेद किया जा सकता है। इस सिद्धान्त का सबसे सरल प्रतिपादन यह है कि किसी वाक्य में शाब्दिक अर्थपूर्णता तब होती है जब उस वाक्य में व्यक्त प्रस्तावना (proposition) या तो विश्लेषणात्मक हो या ऐसा हो कि उसकी अनुभव-परीक्षा हो सके। किन्तु, इस रूप से उसे प्रतिपादन करने में एक कठिनाई है। वाक्य जब तक अर्थपूर्ण न हो, वह प्रस्तावना (Proposition) व्यक्त नहीं करता। हर प्रस्तावना या तो सत्य या असत्य होती है, और जो वाक्य सत्य या असत्य हो वह तो अर्थपूर्ण रहता ही है। अतः यदि उपरोक्त रूप में इस सिद्धान्त को प्रतिपादित किया जाय तो अर्थपूर्णता के मापदण्ड के रूप में यह अयश्रेष्ठ सिद्ध होगा क्योंकि तब इस मापदण्ड का प्रयोग उन वाक्यों पर नहीं हो सकेगा जिनमें प्रस्तावना व्यक्त नहीं हुई है। इस कठिनाई के विवेचन के आधार पर एयर इस सिद्धान्त के प्रतिपादन का एक दूसरा मार्ग अपनाते हैं। उनके अनुसार अर्थ के सत्यापन सिद्धान्त का केन्द्रविन्दु 'वाक्य' नहीं है, 'कथन' (Statement) है। वाक्य (Sentence) तब बनते हैं जब शब्दों को व्याकरण के नियमों के अनुकूल सजाया जाय, किन्तु यदि वाक्य से कुछ कहा जा रहा है, कोई सूचना दी जा रही हैं, अर्थात् सूचनात्मक वाक्य (Indicative Sentences) को कथन (Statement) कहा जा सकता है-वह अर्थपूर्ण हो या नहीं हो। फलत: यदि ऐसे किसी वाक्य का अनुवाद किसी दूसरे वाक्य में हो जाता है, तो कहा जा सकता है कि वे दोनों वाक्य एक ही कथन (Statement) को व्यक्त कर रहे हैं। यहाँ कथन (Statement) तथा प्रतिज्ञप्ति (Proposition) का भी भेद स्पष्ट हो जाता है क्योंकि तब प्रतिज्ञप्ति (Proposition) का प्रयोग सीमित हो जायगा। उसका अर्थ अर्थपूर्ण वाक्यों में जो व्यक्त होता है उसी तक सीमित रहेगा। इस प्रकार प्रतिज्ञप्ति कथनों की एक उपजाति (Subclass) होगी। कहा जा सकता है कि सत्यापन सिद्धान्त का वास्तविक केन्द्रविन्दु कथन (Statement) है। यह अर्थपूर्ण कथनों तथा अर्थहीन कथनों के भेद का एक आधार-एक मापदण्ड प्रस्तुत करता है। ऐसा भी कहा जा सकता है कि यह सिद्धान्त एक ऐसा मापदण्ड देता है जिसके आधार पर हम प्रतिज्ञप्ति (Proposition) तथा जो प्रतिज्ञप्ति नहीं है-इन दोनों में भेद कर सकें। वह मापदण्ड क्या है ? इसी प्रश्न का उत्तर अर्थ के सत्यापन-सिद्धान्त में दिया गया है। अब हम प्रारम्भ में दिये गये इस सिद्धान्त के प्रारम्भिक प्रतिपादन को इस रूप में रख सकते हैं, 'कोई कथन शाब्दिक दृष्टि से अर्थपूर्ण तभी हो सकता है जब वह या तो विश्लेषणात्मक (analytic) हो, या उसकी अनुभव परीक्षा हो सके (enpirically verifiable)। अब अनुभव-परीक्षा' के तात्पर्य को स्पष्ट करना अनिवार्य है। एयर ने अपने सत्यापन-सिद्धान्त के प्रतिपादन में इस पर विशेष ध्यान दिया है। उनका कहना है कि तथ्यात्मक कथनों की अर्थपूर्णता का आधार 'अनुभव-परीक्षा' में है। इसका अर्थ है कि किसी व्यक्ति के लिये वह कथन अर्थपूर्ण तभी हो सकता है जब वह जाने कि वह कथन जो कहना चाह रहा है, जो व्यक्त करना चाह रहा है उसकी परीक्षा कैसे होगी। इसका अर्थ हुआ कि उसे यह जानना है कि किस प्रकार के निरीक्षण आदि के आधार पर वह उस कथन को सत्य या असत्य स्वीकार कर सकता है। इसका अर्थ है कि यह कथन अर्थपूर्ण तभी हो सकता है जब इसमें जो कहा जा रहा है वह उसके सम्भावित अनुभव के या तो अनुरूप हो या यह उसके प्रतिकूल न पड़े। इस बात का एक दूसरा पक्ष भी है। यदि वह पुनरुक्ति (Tautology) नहीं है, फिर भी इसे सत्य या असत्य स्वीकारने से किसी भविष्य के सम्भावित अनुभव में कोई अन्तर न पड़े-यदि इसका सत्य या असत्य होना दोनों इसके हर सम्भाक्ति अनुभव से संगत (consistent) हो, तो यह कथन ही नहीं है-छद्म-कथन है। उदाहरणतः हम कहते हैं वह पुस्तक दूसरे

कमरे में है। अब हम जानते हैं कि किस प्रकार के सम्भावित अनुभव से इसमें जो कहा जा रहा है उसकी सत्यता या असत्यता स्थापित होगी। इस आधार पर इस वाक्य को अर्थपूर्ण कहा जा सकता है।

पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु (Contents of the Course)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	कुल घंटे	पाठ्यचर्या का प्रतिशत अंश
मॉड्यूल-1	**भाषा, सत्य और तर्क** का प्रस्तावना	9	20
मॉड्यूल-2	**भाषा, सत्य और तर्क** का प्रथम अध्याय	9	20
मॉड्यूल-3	**भाषा, सत्य और तर्क** का द्वितीय अध्याय	9	20
मॉड्यूल-4	**भाषा, सत्य और तर्क** का तृतीय अध्याय	9	20
मॉड्यूल-5	**भाषा, सत्य और तर्क** का चतुर्थ अध्याय	9	20
योग		**45**	**100**

अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ (Textbooks/Reference/Resources)

क्र. सं.	पाठ्य-सामग्री	विवरण
1	**आधार/पाठ्य ग्रंथ**	**Language, Truth and Logic**, A.J. Ayer
2	संदर्भ-ग्रंथ	
3	ई-संसाधन	
4	अन्य	

व्यावसायिक नैतिकता
पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

पाठ्यचर्या का नाम: व्यावसायिक नैतिकता

पाठ्यचर्या का कोड : BAPHIL 364

क्रेडिट: 3

सेमेस्टर : VI

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइनव्याख्यान	45
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य	
कौशल विकास गतिविधियाँ	
कुल क्रेडिटघंटे	45

पाठ्यचर्या विवरण (Description of Course) :-

व्यावसायिक नैतिकता (Professional Ethics) इस पाठ्यचर्या के अंतर्गत विद्यार्थी व्यावसायिक नैतिकता (Professional Ethics), नीतिशास्त्र, नैतिकता, मूल्य, प्रमुख मूल्यों के अंतर्गत ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, प्रतिबद्धता, सहानुभूति, समर्पण, व्यावसायिक नीतिशास्त्र में नैतिकता का आधार, परंपराएं, प्रथाएं, प्रचलन, सामाजिक मानदंड, परार्थ की भावना, लोककल्याणकारी दृष्टि, विभिन्न व्यवसायों में नैतिकता का औचित्य, जैव नैतिकता, चिकित्सकीय नैतिकता, विधि में नैतिकता, पत्रकारिता में नैतिकता, शिक्षण में नैतिकता का अध्ययन करेंगे।

अपेक्षित अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes) :-

विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम के अध्ययन उपरांत व्यवसाय के आचरण से जुड़े सभी पहलुओं को समझ सकेगा। यह पाठ्यचर्या व्यक्तियों और व्यापारिक संगठनों के आचरण पर समग्र रूप से लाभकारी रहेगा। विद्यार्थी इस आचार नीति का अध्ययन करते हुये विभिन्न क्षेत्रो में उत्पन्न हुए प्रश्नों सवालों का जवाब दे पाएंगे। इस पाठ्यचर्या के माध्यम से विद्यार्थी में लोककल्याण की भावना जागृत होगी जो समस्त अध्ययन के ज्ञान अनुशासन को नैतिकता के आधार पर प्रभावित करेगी।

पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु(Contents of the Course)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	कुल घंटे	पाठ्यचर्या का प्रतिशत अंश
मॉड्यूल-1	**व्यावसायिक नीतिशास्त्र का परिचय** 1.1- नीतिशास्त्र 1.2- नैतिकता 1.3- मूल्य	15	33
मॉड्यूल-2	व्यावसायिक नैतिकता के प्रमुख मूल्य 2.1- ईमानदारी 2.2- सत्यनिष्ठा 2.3- प्रतिबद्धता 2.4- सहानुभूति 2.5- समर्पण	15	33
मॉड्यूल-3	व्यावसायिक नीतिशास्त्र में नैतिकता का आधार 3.1- परंपराएं 3.2- प्रथाएं 3.3- प्रचलन 3.4- सामाजिक मानदंड 3.5- परार्थ की भावना 3.6- लोककल्याणकारी दृष्टि	10	22

मॉड्यूल-4	**विभिन्न व्यवसायों में नैतिकता का औचित्य** 4.1- जैव नैतिकता 4.2- चिकित्सकीय नैतिकता 4.3- विधि में नैतिकता 4.4- पत्रकारिता में नैतिकता 4.5- शिक्षण में नैतिकता	5	12
योग		**45**	**100**

अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ (Textbooks/Reference/Resources)

क्र. सं.	पाठ्य-सामग्री	विवरण
1	आधार/पाठ्य ग्रंथ	
2	**संदर्भ-ग्रंथ**	1. M.D, Bayles. (1989). Professional Ethics (2nd ed.) Belmont, C.A. Wadsworth. 2. P, Singer.(1979). Practical Ethics, Cambridge Cambridge University Press) 3. R, Gillon. (1986). Philosophical Medical Ethics, Chichesler/New York : Wiloy. 4. Bhagvad, Gita. (2006). Gita Press, Gorakhpur. 5. Frankena, William K. Ethics, Prentice Hall of India. 6. Lillie, William. (1975). An Introduction to Ethics, Allied publishers, Indian Reprint. 7. Singh, K.P. Environmental Ethics, B.H.U. Press, Varanasi. 8. मिश्रा, नित्यानंद. (2006). नीतिशास्त्र. 9. Panigrahi, S.C. (2006)Issues In Indian Ethics, Dept of SAP in Philosophy, Utkal University, Orissa. 10. Maitra, S.K. (1978). The Ethics of the Hindus, University of Calcutta. 11. जोशी, शांति. (1963). नीतिशास्त्र, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. दिल्ली. 12. मिश्र, डॉ. नित्यानंद (2005) नीतिशास्त्र (सिद्धान्त तथा प्रयोग), मोतीलाल बनारसीदास. 13. वर्मा, डॉ. वेद प्रकाश. (1977). नीतिशास्त्र के मूल सिद्धान्त, एलाइड पब्लिकेशन,दिल्ली. 14. वर्मा, डॉ. अशोक कुमार. (1977) नीतिशास्त्र के सिद्धान्त, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली. 15. पांडेय, संगमलाल (2005). नीतिशास्त्र का सर्वेक्षण, सेन्ट्रल पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद. 16. पाठक, डॉ. दिवाकर. (1974). भारतीय नीतिशास्त्र, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी.
3	ई-संसाधन	
4	अन्य	

(विभागाध्यक्ष)

(संकायाध्यक्ष)